Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

وَلَوْ تَرٰٓى اِذْ وُقِفُوْا عَلَى النَّارِ فَقَالُوْا يٰلَيْتَنَا نُرَدُّ وَلَا نُكَذِّبَ بِاٰيٰتِ رَبِّنَا وَنَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ

(अल्-ईनाम : 28)

अनुवाद : और काश तू देख सकता कि जब वे आग के पास (ज़रा) ठहराए जाऐंगे तो कहेंगे हे काश! ऐसा होता कि हम वापस लौटा दिए जाते, फिर हम अपने रब की आयात की तक़ज़ीब न करते और हम मोमिनीन में से हो जाते।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ وَعَلٰى عَبْدِهِ الْمَسِيْحِ الْمَوْعُوْدِ

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ

वर्ष- 7
अंक- 47-48

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

मूल्य
600 रुपए
वार्षिक

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

06 जमादिउल अव्वल 1444 हिज्री कमरी, 01 फ़तह 1401 हिज्री शम्सी, 24-01 दिसम्बर 2022 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वाणी

तुम में अच्छे वही लोग हैं जो क़र्ज़ की अदायगी उम्दगी से करते हैं

(2305) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि एक व्यक्ति का एक साला ऊंट का बच्चा नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़िम्मा क़र्ज़ था। वह आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से तक़ाज़ा करने आया। फ़रमाया : उसे दे दो। उन्होंने उस आयु का ऊंट तलाश किया। एक वर्ष का तो नहीं मिला, उससे बड़ी उम्र का मिला। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : उसे (बड़ी उम्र ही का) दे दो। उस शख़्स ने कहा : आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने (मेरे हक़ से)बढ़ कर अदा किया है। अल्लाह आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को भी बढ़कर नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : तुम में अच्छे वही लोग हैं जो क़र्ज़ की अदायगी उम्दगी से करते हैं।

(तशरीह) हज़रत सय्यद ज़ैनुल आबेदीन वलीउल्लाह शाह साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के वकील ने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की नियाबत में मुफ़व्विज़ा ज़िम्मेदारी अदा की। कभी कबार इन्सान किसी जगह जाकर काम सरअंजाम नहीं दे सकता, इस लिए वकील का मुहताज होता है और बाज़-औक़ात मौजूद हो कर भी वकील का मुहताज हो सकता है। दोनों हालतों में वकील बनाने के जवाज़ की सूरत हो जाती है।

जम्हूर के नज़दीक वकालत अलल तलाक़ जायज़ है। इमाम अबू-हनीफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु के निकट कोई व्यक्ति जो ख़ुद अपने शहर में मौजूद हो, अपनी मौजूदगी की हालत में वकील नहीं कर सकता, सिवाए इसके कि वह बीमार हो या सफ़र पर जा रहा हो।

(बुख़ारी, भाग 4 किताब अल् वकाला, मुद्रित 2008 क़ादियान)

हमारा उसूल तो यह है कि प्रत्येक से नेकी करो और ख़ुदा तआला की समस्त मख़लूक़ से एहसान करो

हुक्काम की इताअत और वफ़ादारी हर मुस्लमान का फ़र्ज़ है

मैं इसको बड़ी बेईमानी समझता हूँ कि गर्वनमैंट की इताअत और वफ़ादारी सच्चे दिल से न की जाए

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का उपदेश

कोई नुस्ख़ा हक्मी नहीं

1899 ई. "हमारे घर में मिर्ज़ा साहिब (मुराद अपने वालिद बुज़ुर्गवार मिर्ज़ा ग़ुलाम मुर्तज़ा साहिब मरहूम) पच्चास बरस तक ईलाज करते रहे। वह इस फ़न चिकित्सा में बहुत प्रसिद्ध थे, परन्तु उनका कहना था कि कोई हक्मी नुस्ख़ा नहीं मिला। हक़ीक़त में उन्होंने सच्च फ़रमाया क्योंकि अल्लाह तआला के इज़न के बग़ैर कोई ज़र्रा जो इन्सान के अंदर जाता है कुछ असर नहीं कर सकता।"

हुक्काम और बिरादरी से हुस्न-ए-सुलूक

एक व्यक्ति ने पूछा कि हुक्काम और बिरादरी से कैसा सुलूक करें। फ़रमाया प्रत्येक से नेक सुलूक करो, हुक्काम की इताअत और वफ़ादारी हर मुस्लमान का फ़र्ज़ है। वे हमारी हिफ़ाज़त करते हैं और हर किस्म की मज़हबी आज़ादी हमें दे रखी है। मैं इस को बड़ी बेईमानी समझता हूँ कि गर्वनमैंट की इताअत और वफ़ादारी सच्चे दिल से न की जाए।

बिरादरी के हुक़ूक़ हैं। उनसे भी नेक सुलूक करना चाहिए, जबकि इन बातों में जो अल्लाह तआला की रजामंदी के ख़िलाफ़ हैं इन से अलग रहना चाहिए।

हमारा उसूल तो यह है कि प्रत्येक से नेकी करो और ख़ुदा तआला की समस्त मख़लूक़ से एहसान करो

दुआ और क़ज़ा-ए-क़दर

"जब अल्लाह तआला का फ़ज़ल क़रीब आता है। तो वह दुआ की क़बूलीयत के अस्बाब पहुंचा देता है। दिल में एक रिक़्क़त और सोज़ो गुदाज़ पैदा हो जाता है, लेकिन जब दुआ की क़बूलीयत का वक़्त नहीं होता तो दिल में इतमेनान और रुजू पैदा नहीं होता। तबीयत पर कितना ही ज़ोर डालो, परन्तु तबीयत मुतवज्जा नहीं होती। इस की वजह यह है कि कभी ख़ुदा तआला अपनी क़ज़ा व कदर मनवाना चाहता है और कभी दुआ क़बूल करता है। इस लिए मैं तो जब तक इज़्न-ए-इलाही के आसार न पा लूं, क़बूलीयत की कम उम्मीद करता हूँ और उसकी क़ज़ा व कदर पर इस से ज़्यादा ख़ुशी के साथ जो क़बूलीयत-ए-दुआ में होती है राज़ी हो जाता हूँ, क्योंकि इस ख़ुदा की इच्छा के फल और बरकात उस से बहुत ज़्यादा हैं।" (मल्-फ़ूज़ात, भाग प्रथम, पृष्ठ 413 मुद्रित क़ादियान 2018 ई.)

क़ुरआन-ए-करीम की ये कितनी बड़ी अख़लाक़ी ख़ूबी है कि जिहाद का हुक्म देने से पहले उसने उसकी सीमाओं को वर्णन करना शुरू कर दिया है ताकि ज़्यादती करने की समभावना ही बाक़ी न रहे

उक़ाब के शब्द में यह इशारा किया है कि नाजायज़ हमले का जवाब ही जिहाद कहलाता है, जारिहाना हमला जिहाद नहीं कहला सकता

सब्र का नतीजा बेहतर होता है, बदला लेने से केवल इन्सान का ग़ुस्सा दूर हो जाता है, मगर सब्र करने की सूरत में उसकी रूहानियत तरक़्क़ी कर जाती है

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु सूरत नहल आयत नम्बर : 127 وَاِنْ عَاقَبْتُمْ فَعَاقِبُوْا بِمِثْلِ مَا عُوْقِبْتُمْ بِهٖ وَلَئِنْ صَبَرْتُمْ لَهُوَ خَيْرٌ لِّلصّٰبِرِيْنَ तर्जुमा अगर तुम (लोग ज़्यादती करने वालों को) सज़ा दो तो जितनी तुम पर ज़्यादती की गई हो तुम उतनी (ही) सज़ा दो और (हमें अपनी ज़ात की क़सम है कि) अगर तुम सब्र करोगे तो सब्र करने वालों के हक़ में वह (यानी सब्र करना) बेहतर होगा की तफ़सीर में फ़रमाते हैं :

इस आयत का मतलब केवल यह है कि तुम्हारे दुश्मन तुम्हारी दावत बिल् हिकमत को सुनकर नहीं मानेंगे बल्कि तुम्हारे क़तल करने के लिए तलवारें उठाएँगे। तो फ़रमाया कि जब ऐसा हो तो तुमको भी अपने दिफ़ा के लिए तलवार उठाने की इजाज़त होगी।

यह कितना मोजज़ाना कलाम है कि अभी रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मक्का श्रीमती में हैं, यहूद से कोई मुक़ाबला शुरू नहीं हुआ न नसारा से। मगर मक्का ही में यह ख़बर देदी गई कि यहूद भी और नसारा भी तुम पर ज़ुलम और ज़्यादती करेंगें और उस वक़्त दिफ़ा के तौर पर तुमको उनके मुक़ाबला की इजाज़त होगी। हाँ यह नसीहत याद रखना कि जल्द-बाज़ी न करना और पहले सब्र का नमूना दिखाना फिर कोई चारा न रहे तो मुक़ाबला करना। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस हुक्म की पूरी तकमील की

शेष पृष्ठ 12 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

ख़ुत्बः जुमअः

अबू बक़र सब लोगों से अफ़ज़ल और बेहतर है सिवाए इसके कि कोई नबी हो

हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो को यह सआदत और फ़ज़ीलत हासिल है कि मक्की समय में हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो के घर में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम रोज़ाना एक दो दफ़ा तशरीफ़ ले जाते थे

लोगों में से कोई भी नहीं जो बलिहाज़ अपनी जान और माल के मुझ पर अबूबकर बिन अबू क़हाफ़ा से बढ़कर नेक सुलूक करने वाला हो अगर मैं लोगों में से किसी को मित्र बनाता तो ज़रूर अबूबकर को ही मित्र बनाता

अबू बकर मुझ से हैं और मैं उनसे हूँ, अबू बकर दुनिया और आख़रत में मेरे भाई हैं

नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को देखा और फ़रमाया यह दोनों कान और आँखें हैं अर्थात मेरे क़रीबी साथियों में से हैं

अबू बकर! तुम मेरी उम्मत में से सबसे पहले हो जो जन्नत में दाख़िल होगे, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के महान ख़लीफ़ा राशिद हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो के मनाक़िब-ए-आलीया का अहादीस की रोशनी में ईमान अफ़रोज़ वर्णन

चार मरहूमीन श्रीमान अब्दुल बासित साहिब (अमीर जमाअत इंडोनेशिया), श्रीमती ज़ैनब रमज़ान सैफ़ साहिबा पत्नी श्रीमान यूसुफ़ उसमान कम्बालिया साहिब (मुरब्बी सिलसिला तनज़ानिया),

श्रीमती हलीमा बेगम साहिबा पत्नी श्रीमान शेख़ अब्दुल क़दीर साहिब दरवेश क़ादियान, और श्रीमती मैले अनीसा एपेसाई साहिबा (केरीबास) का वर्णन और नमाज़-ए-जनाज़ा ग़ायब

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 28 अक्टूबर 2022 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

बदरी सहाबा के विषय में हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो का वर्णन हो रहा था और आप रज़ियल्लाहु अन्हो के मनाक़िब का वर्णन चल रहा था। हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो का स्थान या आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम आप रज़ियल्लाहु अन्हो के बारे में क्या समझते थे या आप रज़ियल्लाहु अन्हो को क्या स्थान देते थे इस बारे में कुछ रिवायात हैं।

हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो को यह सआदत और फ़ज़ीलत हासिल है कि मक्की दौर में हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो के घर में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम रोज़ाना एक दो दफ़ा तशरीफ़ ले जाते थे।

(सही बुख़ारी, किताब मनाक़िब अंसार, هجرة النبی ﷺ واصحابه الی المدینة, रिवायत नंबर : 3905)

हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हो ने वर्णन किया कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनको ज़ातुल सलासिल की फ़ौज पर सिपहसालार निर्धारित कर के भेजा और कहते हैं में आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आया। मैं ने कहा लोगों में से कौन आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को ज़्यादा प्यारा है? आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा। मैंने कहा मर्दों में से? आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया उनका बाप। मैंने कहा फिर कौन? आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया फिर उम्र बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने इसी तरह चंद मर्दों को शुमार किया।

(सही बुख़ारी, किताब फ़ज़ायल अस्हाबुन्नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बाब क़ौल अन्नबीसल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम لو کنت متخذًا خلیلًا, हदीस 3662)

हज़रत सलमा बिन अकवा रज़ियल्लाहु अन्हा वर्णन करते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अबू बकर सब लोगों से अफ़ज़ल और बेहतर है सिवाए इसके कि कोई नबी हो (कंज़ुल उम्माल, भाग 6 हिस्सा 11 पृष्ठ 248 फ़ज़ायल अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो, रिवायत नंबर 32548 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2004 ई.)

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हो ने वर्णन किया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मेरी उम्मत में से मेरी उम्मत पर सबसे ज़्यादा मेहरबान और रहम करने वाला अबू बकर है।

(सुंन तिरमज़ी, अबवाब मनाक़िब, बाब मनाक़िब मआज़ बिन जबल रिवायत नंबर : 3790)

हज़रत अबू सईद रज़ियल्लाहु अन्हो ने वर्णन किया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया बुलंद दर्जात वाले जो उनके नीचे वाले हैं वे उनको देखेंगे जिस तरह तुम तलूअ होने वाले सितारे को देखते हो यानी बुलंद दर्जात वाले ऐसे बुलंद दर्जा पर होंगे कि जो नीचे दर्जे के होंगे वह उनको इस तरह देखेंगे जिस तरह तुम तलूअ होने वाले सितारे को आसमान की तरफ़ देखते हो, आसमान के उफ़ुक़ में देखते हो। और अबू बकर और उमर उन में से हैं। अर्थात वे बुलंद हैं। उनको लोग इस तरह देखेंगे जिस तरह बुलंद सितारे को देखा जाता है। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया और वे दोनों क्या ही ख़ूब हैं। (सुंन अल् तिर्मेज़ी, अबवाब अल्-मनाकिब, बाब मनाक़िब अबी सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो... रिवायत नंबर : 3658)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हो ने वर्णन किया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया। किसी का हम पर कोई एहसान नहीं मगर हमने उसका बदला चुका दिया सिवाए अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो के। उसका हम पर एहसान है और उसको इस का बदला क़ियामत के दिन अल्लाह तआला देगा।

(सुंन अल् तिरमेज़ी, अबवाब अल् मनाकिब बाब मनाकिब अबी बकर, रिवायत नंबर : 3661)

नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपनी आख़िरी बीमारी में फ़रमाया लोगों में से कोई भी नहीं जो बलिहाज़ अपनी जान और माल से मुझ पर अबू बकर बिन अबू क़हाफ़ा से बढ़कर नेक सुलूक करने वाला हो। अगर मैं लोगों में से किसी को ख़लील बनाता तो ज़रूर अबू बकर को ही ख़लील बनाता लेकिन इस्लाम की दोस्ती सबसे अफ़ज़ल है। इस मस्जिद में समस्त खिड़कियों को मेरी तरफ़ से बंद कर दो सिवाए अबू बकर की खिड़की के।

(सही बुख़ारी, किताब अस्सलात, बाब الخوخة والممر فی المسجد, रिवायत नंबर : 467) यह सही बुख़ारी की रिवायत है।

नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अबू बकर मुझ से हैं और मैं उनसे हूँ। अबू बकर दुनियाऔर आख़िरत में मेरे भाई हैं (कन्जुल उम्माल, भाग 6 हिस्सा 11 पृष्ठ 248 فضل أبو بكر الصديق رضی الله عنه, हदीस नंबर 32547 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत : 2004 ई.)

सुंन तिरमेंज़ी की रिवायत यह है कि हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हो ने वर्णन

शेष पृष्ठ 8 पर

ख़ुत्बः जुमअः

अल्लाह तआला के फ़ज़ल से मजमूई लिहाज़ से अल्लाह तआला ने इस दौरे को हर लिहाज़ से अपने फ़ज़लों से नवाज़ा है,
अल्लाह तआला हमेशा आगे नवाज़ता रहे
अल्लाह तआला करे कि मस्जिदों से यह ताल्लुक़ और इबादतों की फ़िक्र उनमें दाइमी हो जाए और हमेशा रहनेवाली हो
और मस्जिदें हमेशा आबाद रहें, जिस तरह इख़लास और वफ़ा के नज़ारे
अफ़राद-ए-जमाअत ने दिखाए हैं वह हमेशा उनमें क़ायम रहें, ख़ाहिश और दुआ है कि यह इबादत-गाह हमारे माज़ी और
मुस्तक़बिल के दरमयान एक पुल का काम करे (मेयर ज़ायन)
यह मस्जिद द्वेष रखने वालों के बारे में मोमिनों की दुआओं की फ़तह की अलामत है
मेरी दिली इच्छा है कि यह मस्जिद न सिर्फ इस शहर बल्कि चारों अतराफ़ के लिए उम्मीद की किरण बन जाए
(ऑनरेबल जूईस मेसन, मैंबर (ILLINOIS) जनरल असैंबली)
इमाम जमाअत का यह पैग़ाम कि मुआशरे में द्वेष रखने वालों शख़्स की कोई जगह नहीं,
बहुत ही शानदार पैग़ाम था और मुझे इमाम जमाअत की यह बात बहुत पसंद आई है कि हमारे पास जो हथियार है वह दुआ का
हथियार है (एक मेहमान)
आपकी मस्जिद हमारी कम्यूनिटी के लिए उम्मीद और दोस्ती का ज़रीया है (एक मेहमान)
इमाम जमाअत के ख़िताब का महवर बाहमी इत्तिहाद था (डाक्टर जैसी राडरेगज़)
मैं आपके माटो "मुहब्बत सब के लिए नफ़रत किसी से नहीं के बारे में जानता था लेकिन आप लोगों को देखकर इस पर मज़ीद
बढ़ गया
इमाम जमाअत अहमदिया दो ख़ूबियों को फ़रोग़ देने के लिए वक़्फ़ हैं जिसमें पहली मज़हबी आज़ादी और दूसरी बैनुल मज़ाहिब
मुकालमा-ओ-मुख़ातबा हैं (प्रोफ़ैसर डाक्टर राबर्ट हंट)
ज़ुलम-ओ-सितम की जारी दास्तान के बावजूद इमाम जमाअत ने दूसरों से इंतेक़ामी तशद्दुद करने से मना फ़रमाया जो एक बहुत
महान कार्य है (ऑनरेबल माईकल मिक काल)
मुझे जो चीज़ यहां सबसे ज़्यादा नुमायां लगी वह इमाम जमाअत का ख़िताब था कि
किस तरह मज़हबी इख़तेलाफ़ और मुख़्तलिफ़ नज़रियात के बावजूद हम सब आपस में एक दूसरे से जुड़े हैं (एक मेहमान महिला)
मुझे ज़ाती तौर पर इस जमाअत से कोई ख़ौफ़ नहीं है और दूसरों के ख़ौफ़ज़दा होने की भी कोई वजह समझ नहीं आती
क्योंकि यह जमाअत तो बहुत मुहब्बत करने वाली, एहसास करने वाली और हमेशा ख़िदमत-ए-ख़लक़ करने वाली जमाअत है
(एक मेहमान ख़ातून)
मैं इस बात को बहुत सराहता हूँ कि यहां किस तरह हिक्मत के साथ अमन, इत्तेहाद और इन्साफ़ के बारे में बात की गई है
(एक मेहमान)
वर्तमान दौरा अमरीका के अहमदियों और अन्य लोगों पर प्रभाव, ग़ैरों के विचार और दौरे के नतीजे में नाज़िल होने वाले बेशुमार
इलाही अफ़ज़ाल का ईमान अफ़रोज़ वर्णन
अमरीकी और इंटरनैशनल ज़राए इबलाग़ में दौरे की वसीअ तशहीर

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 21 अक्टूबर 2022 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَا الضَّآلِّيْنَ

पिछले दिनों जैसा कि आप जानते हैं मैं अमरीका की कुछ जमाअतों के दौरा पर था। एम.टी.ए. के ज़रीया से भी और जमाअती इलैक्ट्रॉनिक मीडीया के ज़रीया से भी ख़बरें पहुँचती रही हैं। यह दौरा अल्लाह तआला के फ़ज़ल से ख़ैर-ओ-ख़ूबी से हुआ। बहरहाल इस के इलावा दूसरे दुनियावी चैनल भी इसकी काफ़ी कवरेज देते रहे हैं।

हर लिहाज़ से अल्लाह तआला के फ़ज़लों के नज़्ज़ारे देखने में आए हैं।

अपनों पर भी इस दौरे का नेक असर क़ायम हुआ और ग़ैरों पर भी। एक ख़ादिम ने अपने एक दोस्त को कहा कि मेरे ज़हन में जमाअत और ख़िलाफ़त के विषय में कुछ बातें पैदा हो रही थीं, कुछ तहफ़्फ़ुज़ात थे जो अब इस दौरा की वजह से बिल्कुल ख़त्म हो गए हैं। इस तरह के बहुत से अच्छे तास्सुरात हैं। फिर लोगों के, बच्चों, औरतों, मर्दों के मुलाक़ात के बाद जो भावनाओ से परिपूर्ण विचार होते थे उनकी अपनी एक लंबी फ़हरिस्त है। वे रिपोर्टों में आप पढ़ते रहे होंगे। फिर ज़ायन में भी, डैलस में भी और बैतुल रहमान मेरी लैंड में भी नमाज़ों पर औरतों, बच्चों और मर्दों की जो हाज़िरी होती थी वह काफ़ी संख्या में होती थी और जिस तरह वह मेरे आते-जाते वक़्त अपने जज़बात का इज़हार करते थे इस से साफ़ नज़र आ रहा होता था कि उनके दिलों में ख़िलाफ़त से मुहब्बत का ताल्लुक़ है और इख़लास-ओ-वफ़ा है। पढ़े लिखे लोग भी, अमीर लोग भी, दुनियावी लिहाज़ से व्यस्त लोग भी नमाज़ के लिए कई कई घंटे लाईन में आकर लग जाते थे ताकि मस्जिद में जगह मिल जाए। यह नहीं कि फ़ारिग़ लोग हैं जो आ गए। उनमें भी यह तबदीली इस बात का इज़हार है या यह रवैय्या, यह इज़हार इस बात का इज़हार है कि अल्लाह तआला के फ़ज़ल से दीन और जमाअत की मुहब्बत उनके दिलों में है। ख़िलाफ़त से ताल्लुक़ उनके

दिलों में है। ग्यारह बारह साल की आयु के बच्चे पाँच छः घंटे लाईन में लग जाते थे क्योंकि चैकिंग और कोविड टैस्ट की वजह से देर लग जाती थी लेकिन कभी किसी ने भी, न मेहमानों ने, न अपनों ने, कोई एतराज़ नहीं किया। बल्कि अपनों ने भी नज़ाम की मुकम्मल इताअत और इख़लास-ओ-वफ़ा के नमूने दिखाए और ज़ायन में बल्कि एक मेहमान ने भी इस बात को देखा और कहा कि मैं ने देखा कितना smooth निज़ाम चल रहा था कि बाक़ायदा चैकिंग हो रही थी, देर लग रही थी लेकिन इसके बावजूद कोई एतराज़ नहीं था। एक ग्यारह बारह साल के लड़के के माँ बाप मुझे कहने लगे कि हमारा बेटा जब से आप आए हैं मस्जिद में आने के लिए पाँच छः घंटे पहले आकर लाईन में लग जाता है और किसी चीज़ की पर्वा नहीं है हालाँकि पहले यह इस फ़िक्र से नमाज़ों में कभी नहीं आया। बहरहाल बच्चों में, लड़कों में, लड़कियों में, सब में मैं ने ख़ुशी और इज़हार का ताल्लुक़ देखा। यह जमाअत पर अल्लाह तआला का फ़ज़ल है। हाज़िरी जो हर जगह नमाज़ों पर होती थी वह इंतेज़ामिया की तवक़्क़ुआत से बहुत बढ़कर थी।

अल्लाह तआला करे कि मस्जिदों से यह ताल्लुक़ और इबादतों की फ़िक्र उनमें दायमी हो जाए और हमेशा रहने वाली हो और मस्जिदें हमेशा आबाद रहें। जिस तरह इख़लास-ओ-वफ़ा के नज़्ज़ारे अफ़राद जमाअत ने दिखाए हैं वह हमेशा उनमें क़ायम रहें।

अमरीका जैसे मुल्क में लोगों का ख़्याल है कि लोग दीन को भूल जाते हैं लेकिन मुझे तो अक्सरियत में इस तरफ़ तवज्जा और फ़िक्र नज़र आई। जो माली क़ुर्बानियों में कमज़ोर हैं वे भी अपने लिए और अपने बच्चों, नसलों के लिए दीन से और ख़िलाफ़त से जुड़े रहने के लिए खासतौर पर दुआ की दरख़ास्त करते थे। अल्लाह तआला अफ़राद-ए-जमात और अमरीका के इख़लास-ओ-वफ़ा को हमेशा बढ़ाता रहे।

इसी तरह लजना, ख़ुद्दाम, अंसार बल्कि बच्चों ने भी इस अरसा में बहुत मेहनत से अपनी डयूटीयाँ दी हैं। औरतों, मर्दों ने कई कई दिन जाग कर तैयारियां की हैं। हाज़िरी भी हर जगह अल्लाह तआला के फ़ज़ल से जैसे मैं ने कहा काफ़ी ज़्यादा थी, हज़ारों में होती थी और उनकी हाज़िरी बैतुर रहमान में तो जलसा की हाज़िरी से बढ़कर थी लेकिन बड़े मुनज़्ज़म तरीक़े से उन्होंने अपने काम को सँभाला है। अल्लाह करे कि अफ़राद-ए-जमाअत अमरीका के इख़लास-ओ-वफ़ा का यह मयार हमेशा बढ़ता रहे और अल्लाह तआला करे कि यह तबदीली आरिज़ी न हो बल्कि हमेशा के लिए हो।

इस वक़्त में ग़ैरों के कुछ तास्सुरात वर्णन करूँगा। अल्लाह तआला ने ग़ैरों के दिलों पर भी ग़ैरमामूली असर डाला है। अल्लाह तआला उन लोगों के सीने मज़ीद खोले और ये लोग सच्चाई को पहचानने वाले भी बन जाएं। बहरहाल कुछ तास्सुरात पेश करता हूँ।

ज़ायन में जो मस्जिद बनी है "फ़तह-ए-अज़ीम" इसके हवाले से वहां जो फंक्शन हुआ था इस में 161 ग़ैर मुस्लिम और ग़ैर अज़ जमाअत मेहमानों ने शिरकत की जिनमें कांग्रेस मैन, कांग्रेस वूमन, मेयरज़, डाक्टरज़, प्रोफ़ैसर्ज़, टीचरज़, वुकला, इंजनीयरज़, सैक्योरिटी के इदारों के नुमाइंदगान और ज़िंदगी के मुख़्तलिफ़ शोबों से ताल्लुक़ रखने वाले शामिल हुए थे।

ज़ायन के शहर के मेयर ऑनरेबल बिल्ली मैकीनी (Billy Mckinney) ने अपने तास्सुरात में वर्णन किया कि मेरे लिए जमाअत-ए-अहमदिया मुस्लिमा के आलमी राहनुमा को मस्जिद फ़तह अज़ीम के अवसर पर ज़ायन शहर में ख़ुश-आमदीद कहना इंतेहाई एज़ाज़ की बात है। फिर कहने लगे यहां ज़ायन में हमारा माटो "Historic past and dynamic future" है और हमारे शहर के दिल में यह ख़ूबसूरत मस्जिद इस माटो की एक आला मिसाल है। फिर कहते हैं ख़ाहिश और दुआ है कि यह इबादत-गाह हमारे माज़ी और मुस्तक़बिल के मध्य एक पुल का काम करे।

यह जानते हुए कि यह मस्जिद ऐसी शानदार ईमान से भरपूर कम्यूनिटी के नुमाइंदों से भरी हुई है मुझे ज़ायन शहर के मुस्तक़बिल के लिए भी उम्मीद दिलाती है। जब मैं इस पैग़ाम को देखता हूँ जो अहमदिया कम्यूनिटी हमारे शहर में ले कर आई है तो मुझे ख़ुशी होती है। तो यह उम्मीद ग़ैरों को भी हमसे हो रही है। फिर कहता है कि यह एक ऐसी जमाअत है जो इस्लाम के पैग़ंबर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का सम्मान करती है जिन्हों ने ईसाइयों के साथ अह्द किया था। फिर आगे कहते हैं कि अहमदिया मुस्लिम कम्यूनिटी की तरफ़ से इस शहर में जो शानदार ख़िदमात सरअंजाम दी गई हैं और इस शहर की तरक़्क़ी और उसके लोगों की फ़लाह-ओ-बहबूद को बेहतर बनाने के लिए जो काम किए गए हैं उन पर मैं आपका तह-ए-दिल से शुक्रगुज़ार हूँ और हम इस शहर की चाबी इमाम जमाअत अहमदिया की ख़िदमत में पेश करते हैं। चाबी देते हैं। फिर उन्होंने शहर की चाबी भी प्रस्तुत की।

ज़ायन शहर के मेयर के मज़ीद तास्सुरात यह हैं, कहते हैं कि मैं यहां 1962 ई. से मुक़ीम हूँ। यह प्रोग्राम ज़ायन शहर और जमात के लिए एक तारीख़ी प्रोग्राम है। फिर मुझे भी उन्होंने बड़े जज़बाती अंदाज़ में कहा कि आज तुमने मुझे speechless कर दिया है और कहने लगे कि आपकी मौजूदगी का एहसास बहुत उम्दा है।

मैंबर आफ़ अलीनोए (Illinois) जनरल असैंबली ऑनरेबल जोसमेसन (Joyce Mason) ने अपने तास्सुरात में कहा कि यहां ज़ायन में मस्जिद फ़तह-ए-अज़ीम के आरम्भ की इस तारीख़ी तक़रीब का हिस्सा बनना मेरे लिए एज़ाज़ की बात है। ज़ायन अहमदिया मुस्लिम कम्यूनिटी के लिए तारीख़ी एहमीयत का हामिल है। आज इस शहर के लिए ख़ास दिन है। ज़ायन एक ऐसी जगह थी जिसकी बुनियाद पिछली सदी के आग़ाज़ में इलैगज़ेंडर डोवी ने रखी थी जो उसे एक थ्योक्रैटिक शहर बनाना चाहते थे जिसके दरवाज़े उसके मानने वालों के इलावा बाक़ी प्रत्येक के लिए बंद थे लेकिन आज ज़ायन शहर मुख़्तलिफ़ मज़ाहिब से ताल्लुक़ रखने वाले लोगों का घर है और यह मस्जिद द्वेष रखने वालों के बारे में मोमिनों की दुआओं की फ़तह की निशानी है।

मैं अहमदिया मुस्लिम कम्यूनिटी को इस शानदार कामयाबी पर मुबारकबाद पेश करती हूँ। ग़ैरों को भी इस मुक़ाबले का अच्छी तरह पता लग गया। फिर कहती हैं कि इमाम जमाअत अहमदिया अमन के फ़रोग़ के हवाले से एक कार्य करने वाला मुस्लिम मार्गदर्शक हैं। फिर उन्होंने कहा कि उन्होंने अमन के क़ियाम पर ज़ोर देते हुए दुनिया-भर के क़ानून साज़ों और दीगर राहनुमाओं से बात की है। फिर कहती हैं : ज़ायन शहर की ख़ुशक़िसमती है कि अम्न पसंद और दूसरों की ख़िदमत करने वाली जमाअत ने यहां आबाद होने और इतनी ख़ूबसूरत मस्जिद बनाने का फ़ैसला किया है।

मेरी दिली इच्छा है कि यह मस्जिद न केवल इस शहर बल्कि चारों अतराफ़ के लिए उम्मीद की किरण बन जाए। मैं इस कम्यूनिटी को नई मस्जिद के इफ्तेतः पर मुबारकबाद देते हुए ऐवान में एक क़रारदाद पेश कर रही हूँ।

फिर डाक्टर कटरीना लेंटोस् (Katrina Lantos) जो कि लेंटोस् (Lantos) फ़ाउंडेशन फ़ार हियूमन राईट्स ऐंड जस्टिस की सदर हैं, कहती हैं मुझे ऐसे महसूस होता है कि जब भी मैं जमात के लोगों के साथ मिलती हूँ तो मेरी रूहानियत में इज़ाफ़ा होता है। फिर कहती हैं कि यहां ज़ायन में होने वाले मुबाहला के बारे में सुनकर बहुत हैरत हुई कि उस ज़माना में जबकि मोबाइल फ़ोन, कम्पयूटर और अन्य ज़राए मुवासलात मौजूद नहीं थे उस वक़्त भी इस मुक़ाबला को इतनी तशहीर मिली।

एक नज़रिया डाक्टर जान डोवी का था जिसकी बुनियाद नफ़रत, बाहमी तफ़रीक़ और द्वेष पर थी और दूसरा नज़रिया जो कि जमाअत अहमदिया के संस्थापक मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहब का था जो कि बाहमी इज़्ज़त और बुर्दबारी पर मुश्तमिल था और एक ऐसी शख़्सियत की तरफ़ से था जिन्हों ने इस का नतीजा पुर्णतः अल्लाह के हाथ में छोड़ रखा था। फिर परिणाम हम जानते हैं कि इस मुबाहले में किस की फ़तह हुई और निसंदेह मस्जिद जिसका अब उद्घाटन होने जा रहा है जिसका नाम "फ़तह-ए-अज़ीम" मस्जिद रखा गया है, इस का मतलब यह है कि अज़ीमुश्शान फ़तह जो कि इस मुबाहला में जमाअत अहमदिया और बानी जमाअत अहमदिया के हिस्सा में आई। फिर कहती हैं कि लेकिन मेरे ख़्याल में हमें यह कहना चाहिए कि वह न सिर्फ जमात अहमदिया बल्कि इन्सानियत की भी फ़तह थी क्योंकि इस से बाहमी इज़्ज़त, मुहब्बत और तहम्मुल की भी फ़तह हुई जिसका नमूना हम अब इस अज़ीमुश्शान जमाअत में देखते हैं। फिर कहती हैं कि आज जिस तरह हम यहां इस ख़ूबसूरत और पुरअमन माहौल में बैठे हुए हैं वहां इन अहमदियों को भी याद रखना होगा जो पाकिस्तान में बैठे हुए हैं और अपने मज़हब की वजह से रोज़ाना नाक़ाबिल-ए-बयान ज़ुलम-ओ-सितम, तशद्दुद और मुनाफ़िरत का सामना करते हैं जो कि हुकूमत-ए-

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)

तालिबे दुआ
KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY, JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

वक़्त की मौजूदगी में भी अपने आपको अकेला महसूस करते हैं।

फिर ज़ायन के पूर्व कमिशनर अमोस मूनक (Amos Monk) साहिब ने अपने तास्सुरात का इज़हार किया। कहते हैं कि मेरे ख़्याल में आपकी तालीमात हर चीज़ को प्रभावित किए हुए है और दुनिया को इस से ज़्यादा आगाही होनी चाहिए। मेरे ख़्याल में यह आजकल की दुनिया का ख़ूबसूरत तरीन रहस्य है। मैं अपने सामने मेज़ पर पड़े ब्रोशर देख सकता हूँ जिस पर अदल, इन्साफ़, ख़ुलूस और मुहब्बत का पैग़ाम है। यही तो वह चीज़ें हैं जिसकी दुनिया को ज़रूरत है। नफ़रत ख़त्म कर दें तो दुनिया जन्नत नज़ीर हो जाएगी। मेरे ख़्याल में यह पैग़ाम समस्त संसार को सुनना चाहिए। दुनिया के मसायल का यही वाहिद हल है।

प्रोफ़ैसर क्रेग कोंसिडाइन (Craig Considine) जिन्हों ने रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की जीवनी पर एक पुस्तक भी लिखी हुई है, प्रोफ़ैसर हैं, वैसे बड़े पक्के ईसाई हैं, कहते हैं कि मैं इस बात से बहुत भावुक हो गया कि ख़लीफ़-ए-वक़्त मुझे पुराने दोस्त की तरह मिले।

इमाम जमाअत की तक़रीर मुझे बहुत पसंद आई। इस से इस्लाम के बारे में मेरा इलम बढ़ा है।

जब मुझे इस ख़िताब का मतन मिलेगा तो मैं उसे अपनी अगली किताब में प्रयोग करूँगा। फिर कहते हैं कि इमाम जमाअत ने बहुत ही ख़ूबसूरत अंदाज़, आसान शब्दों में यह मज़मून वर्णन फ़रमाया है कि हर वर्ग का इन्सान आसानी से समझ सकता है। फिर कहते हैं कि जो समस्त इन्सानी इक़दार अपनाने, बाहमी सम्मान, बर्दाश्त, वक़ार और इज़्ज़त-ए-नफ़्स का ख़्याल रखने पर तवज्जा दिलाई है ये मुझे खासतौर पर पसंद आया है। फिर कहते हैं आप दरअसल हमें हम सबको बाहमी मुहब्बत की तरफ़ बुला रहे हैं। उन्होंने वहां बैठ के ख़ुतबा जुमा भी सुना था। पूरा एक घंटा बैठे रहे और फिर इसके बाद उन्होंने कहा, मुझे भी कहने लगे कि मैंने ऐसा ख़ुतबा पहले कभी सुना।

अलीनोए (Illinois) से ताल्लुक़ रखने वाली एक मेहमान मेलोडी हाल (Melody Hall) कहती हैं कि मैं प्रॉडक्ट डिवैलपमैंट मैनेजर हूँ। यह प्रोग्राम बहुत दिलचस्प था। मैंने बहुत आनंद उठाया।

इमाम जमाअत का यह संदेश कि मुआशरे में द्वेष रखने वालों शख़्स की कोई जगह नहीं, बहुत ही शानदार पैग़ाम था। आपको देखना, आपकी बातें सुनना, एक बहुत मुनफ़रद, अच्छा एहसास है। मुझे बहुत मज़ा आया और मुझे इमाम जमाअत की ये बात बहुत पसंद आई है कि हमारे पास जो हथियार है वह दुआ का है।

एक और मेहमान जीफ़ फ़ैंडर (Geff Fender) ने कहा मैं सर्टीफ़ाईड पब्लिक एकाऊंटैंट हूँ और रईल स्टेट का काम भी करता हूँ। यह मेरा पहला तजुर्बा था। बहुत मुतास्सिर हुआ हूँ। यहां मस्जिद के उद्घाटन पर आना मेरी ज़िंदगी का एक अनमोल अवसर था। फिर ख़िताब का कहा कि इस से बड़ा प्रभावित हुआ हूँ और आप लोगों के बारे में बड़ी नई मालूमात मिली हैं। फिर कहने लगे कि मेरे लिए दावत-ए-मुबाहला एक नई चीज़ थी और मैं उसके बारे में मज़ीद पढ़ूँगा।

इस तरह तब्लीग़ के रास्ते भी खुलते हैं।

एक हाईस्कूल टीचर मेट रेंडर (Matt Render)भी आए हुए थे। कहते हैं कि मुझे इमाम जमाअत का पैग़ाम और जिस तरह समझा रहे थे, यह अंदाज़ बहुत अच्छा लगा। मेरे जैसे बहुत से लोग इस पैग़ाम को आसानी से समझ सकते थे।

एमरजैंसी सर्विसिज़ से ताल्लुक़ रखने वाली मेरी लू हाईल बर्न्ड या हल बर्न्ड (Mary Lou Hildebrand) भी इस प्रोग्राम में शामिल थीं। कहती हैं मैं बहुत मुतास्सिर हुई। आपके पैग़ाम में ख़ुलूस छलकता था। कोई तकल्लुफ़ नहीं था। हर लिहाज़ से सच्चा और खरा अंदाज़ था। इस से हर कोई आपके रोज़मर्रा ज़िंदगी का अंदाज़ा कर सकता है।

डाक्टर जैसी रॉड रेगज़(Jesse Rodriguez) भी इस प्रोग्राम में शरीक थे। यह Benton इलाक़ा के स्कूलों के सुपरिटेंड हैं, कहते हैं कि इमाम जमाअत के ख़िताब का महवर बाहमी इत्तिहाद था। बहुत शानदार संदेश था। आपने कहा समस्त मज़ाहिब एहमीयत रखते हैं और हम सब इकट्ठे हो सकते हैं। बहुत ही अच्छा था।

फिर एक स्थानीय हाईस्कूल के प्रिंसिपल ज़ैक़ लीविंग स्टोन (Zach Living-stone) कहते हैं कि इमाम जमाअत की बातें अपने अंदर एक ख़ास भावना रखती हैं। विशेषता इन्सानी हुक़ूक़ और ख़िदमत-ए-इन्सानियत के लिए कोशिशें निहायत प्रभावित करने वाले हैं। आपका का मोटो "मुहब्बत सब के लिए नफ़रत किसी से नहीं" समस्त क़ौमों, तमाम मज़ाहिब और खासतौर पर समस्त ज़ायन शहर में गूँजता है। इस पैग़ाम की अशद ज़रूरत है।

महामारी के हालात के बाद हमारी फ़ैमिलीज़ और विद्यार्थियों में बहुत भावनात्मक और आर्थिक ज़वाल आया है और हमें इन मसायल से बाहर निकलने के लिए इस पैग़ाम की अशद ज़रूरत है।

एक और मेहमान शामिल हुए। उन्होंने ज़ायन मस्जिद के संग-ए-बुनियाद के अवसर पर ईंट भी रखी थी। कहते हैं कि आज एक ख़ूबसूरत दिन था। मुझे पिछले साल इस मस्जिद के संग-ए-बुनियाद रखने में शामिल होने की तौफ़ीक़ मिली थी। मैं बहुत ख़ुश था कि मैं उसे मुकम्मल होता देखूँगा। आपकी मस्जिद हमारी कम्यूनिटी के लिए उम्मीद और दोस्ती का ज़रीया है।

ज़ायन की पुलिस के चीफ़ एरिक (Eric) साहिब कहते हैं बड़ा अच्छा प्रोग्राम था। सब लोगों की तरफ़ से मुहब्बत और ख़ुलूस देख कर बहुत अच्छा लगा। यह पैग़ाम कि इस से कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता कि आप कौन हैं। एहमियत इस बात की है कि एक दूसरे का ख़्याल रखने वाले हैं क्या ही उम्दा और ख़ूबसूरत पैग़ाम है।

एक मेहमान जैनीफ़र (Jennifer) कहती हैं कि अगर आपकी जमाअत के उसूलों की बात की जाए तो वह सबसे आला हैं। जब आप ज़ायन शहर में क़दम रखते हैं तो पुरानी इमारत पर एक माटो "मुहब्बत सब के लिए नफ़रत किसी से नहीं" का पैग़ाम दिखाई देता है और इस की गूंज आपके साथ रहती है। यह आवाज़ आपके साथ रहती है और यही ज़ायन शहर की असल है।

फिर एक और मेहमान चीरी नील (Cheri Neal) साहिबा जो ज़ायन टाउन शिप की सुपरवाइज़र हैं कहती हैं इंतेज़ामात से मैं बहुत हैरान हुई। मुझे बहुत ख़ुशी है कि आप अपने इस मक़सद में कामयाब हुए।

फिर एक और मेहमान ने कहा यह जान कर बहुत अच्छा लगा कि हमारे दरमयान आप जैसे राहनुमा मौजूद हैं जो कि लाखों लोगों की नुमाइंदगी करते हैं और लोगों को आपस में जोड़ते हैं। इस विषय पर बात करते हैं कि हम सब एक हैं और हर मज़हब की एहमियत है। यह पैग़ाम बहुत अच्छा और प्रभावी है।

महिला मेहमान ग्लोरिया (Gloria) साहिबा कहती हैं ज़ायन की तारीख़ बहुत मालूमाती थी। जबकि मैं यहां पर रहती हूँ लेकिन इस जगह के बारे में काफ़ी चीज़ें ऐसी थीं जो मैं नहीं जानती थी। फिर एक मेहमान ने कहा। मैंने इस तक़रीब से भरपूर लुतफ़ उठाया और इस पैग़ाम ने मुझे बहुत प्रभावित किया है। मैं आपके माटो "मुहब्बत सब के लिए नफ़रत किसी से नहीं" के बारे में जानता था लेकिन आप लोगों को देखकर इस पर मज़ीद यक़ीन बढ़ गया।

मुझे बहुत सारी चीज़ों ने मुतास्सिर किया है। और फिर कहने लगे इमाम जमाअत ने जो यह कहा कि क़ुरआन-ए-मजीद ही एक वह किताब है जो तमाम मज़ाहिब की हिफ़ाज़त करती है मैंने यह नई बात सीखी है। मुझे पहले इस बात का इलम नहीं था।

फिर एक इंडियन प्रोफ़ैसर शोभाना शंकर (Shobana Shankar) साहिबा, उनकी मेरे से मुलाक़ात भी हुई थी, स्टेट यूनीवर्सिटी आफ़ न्यूयार्क की प्रोफ़ैसर हैं। अब्दुस्सलाम रिसर्च सैंटर इटली से भी रिसर्च कर चुकी हैं। कुछ अरसा यह घाना में भी रही हैं। उन्होंने इज़हार किया कि आप घाना में थे। आपका काम ज़िंदा है। यह मुझे बातों में कहीं कहा। प्रोफ़ैसर ने बताया कि अफ़्रीक़ा में इस की कई प्रोफ़ैसर्ज़ से बात हुई है जो कि अहमदिया गर्लज़ स्कूल से तालीम याफ़ता हैं। ये लड़कियों के लिए बेहतरीन स्कूल हैं। यह अफ़्रीक़ा में जमाअत की तालीमी ख़िदमात और तारीख़ को उजागर करना चाहती हैं और मग़रिबी अफ़्रीक़ी अहमदियों पर एक किताब लिखना चाहती हैं। प्रोफ़ैसर ने यह कहा कि मुक़ामी ज़बान और अनुवाद करने वालों से इस्तेफ़ादा करने में जमाअत की मुआवनत चाहिए तो बहरहाल उनको मैंने कहा था जहां भी आपको मदद की ज़रूरत होगी इंशा अल्लाह हम मदद कर देंगे और मैं ने कहा बल्कि घाना के इलावा बाक़ी मुल्कों को भी आपको शामिल करना चाहिए।

फिर डैलस (Dallas) में बैतूल इकराम मस्जिद का उद्घाटन हुआ। इस तक़रीब में भी 140 ग़ैर मुस्लिम और ग़ैर अज़ जमाअत मेहमानों ने शिरकत की। उनमें

हदीस नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और यदि खड़े होकर संभव न हो तो बैठ कर और यदि बैठ कर भी संभव न हो तो पीठ के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

सियास्तदान, डाक्टरज़, प्रोफ़ैसर्ज़, टीचरज़, वुकला, इंजनियरज़, सैक्योरिटी के इदारों के नुमाइंदगान और मुख़्तलिफ़ शोबों से ताल्लुक़ रखने वाले मेहमान शामिल थे।

ऐलन (Allen) शहर की सिटी कौंसल के मैंबर कार्ल कलेमनसिक (Carl Clemencich) जिन्हों ने शहर की चाबी भी पेश की थी उन्होंने अपने जज़बात का इज़हार करते हुए कहा आज मस्जिद बैतुल इकराम के उद्घाटन की तारीख़ी तक़रीब में शामिल होना बड़े एज़ाज़ की बात है। मैं मेयर और ऐलन (Allen) शहर की तमाम सिटी कौंसल की तरफ़ से जमाअत अहमदिया को इस ज़बरदस्त कामयाबी पर मुबारकबाद देता हूँ। मेयर दो दिन पहले मुझे मिल के गए थे। मस्जिद में आए थे और मिले थे और माज़रत कर रहे थे कि मैं मुल्क से बाहर जा रहा हूँ इसलिए हाज़िर नहीं हो सकूँगा और अपना नुमाइंदा भेजूँगा। वह मेयर साहिब भी अच्छे मिलनसार थे।

फिर मेयर के ये नुमाइंदे कहते हैं कि हम जमाअत अहमदिया की ख़िदमात को सराहते हैं जिसमें गरीबों के लिए खाना तक़सीम करना, ज़रूरतमंदों के लिए कपड़े जमा करना और बहुत से दीगर अवसरों पर इस इलाक़े के ज़रूरतमंद रिहायशियों की मदद करना शामिल है। फिर कहते हैं यह ऐलन शहर की ख़ुशक़िसमती है कि एक अम्न पसंद और इन्सानियत की ख़िदमत का जज़बा रखने वाली कम्यूनिटी ने इस शहर को अपनाया और इस शहर में यह ख़ूबसूरत मस्जिद बनाई।

मेरी ख़ाहिश है कि यह मस्जिद न सिर्फ इस शहर के लिए बल्कि इस समस्त इलाक़े के लिए एक उम्मीद की किरण साबित हो। ऐलन (Allen) शहर जो है ये भी डैलस (Dallas) के बिल्कुल साथ ही जुड़ता शहर है। अब तक़रीबन उस का हिस्सा ही बन चुका है। आख़िर में उन्होंने मेयर और ऐलन (Allen) शहर की कौंसल की तरफ़ से शहर की चाबी भी पेश की।

प्रोफ़ैसर डाक्टर राबर्ट हंट (Dr Robert Hunt) तक़रीब में शामिल थे जो कि सदर्न मैथोडिस्ट यूनीवर्सिटी परकिनज़ स्कूल आफ़ थियोलोजी (Southern Methodist University, Perkins School of Theology) में ग्लोबल थियोलोजिकल Global Theological) विभाग के डायरेक्टर हैं। कहते हैं कि मैं जमात अहमदिया का शुक्रिया अदा करना चाहता हूँ कि आपने मैथोडिस्ट यूनीवर्सिटी से मुझे और मेरे साथियों को आज के तारीख़ी प्रोग्राम में शमूलीयत की दावत दी। यह हमारे लिए बहुत फ़ख़र की बात है। और फिर कहते हैं जमाअत के सरबराह, इमाम जमाअत अहमदिया दो ख़ूबियों को फ़रोग़ देने के लिए वक़्फ़ हैं जिसमें पहली मज़हबी आज़ादी और दूसरी बैनुल मज़ाहिब वार्तालाप हैं।

इन दोनों ख़ूबियों का आपस में गहरा ताल्लुक़ है क्योंकि मज़ाहिब के अंदर अगर बाहमी इफ़हाम-ओ-तफ़हीम न हो और बाहमी एहतराम न हो तो भेदभाव की आवाज़ को शक्ति मिलती है और मैं यह बात इस बुनियाद पर करता हूँ कि मेरी आधी बालिग़ ज़िंदगी ऐसे देशों में गुज़री है जहां मैं ख़ुद मज़हबी अक़ल्लीयत में था। फिर कहा कि तारीख़ गवाह है कि जमाअत अहमदिया को ज़ुलम का निशाना बनाया गया और इसी वजह से यह जमाअत मज़हबी आज़ादी की काविशों में सफ़-ए-अव्वल पर रही और यही चीज़ है कि जब तक हम एक दूसरे के साथ एहतेराम और खुली ज़हनीयत के साथ पेश न आएं हम भेदभाव पर क़ाबू नहीं पा सकते और नकारात्मक चीज़ों को मुआशरे से ख़त्म नहीं सकते।

फिर रिपब्लिकन (Republican) कांग्रेस मैन ऑनरेबल माईकल मुककाल (Michael McCaul) ने अपने ख़्यालात का इज़हार किया। कहते हैं कि दुनिया के तीन मज़ाहिब यहूदियत, ईसाइयत और इस्लाम हज़रत इबराहीम अलैहिस्सलाम से अपनी तारीख़ जोड़ते हैं और फिर मुझे उन्होंने कहा कि आपका एतिक़ाद है कि हज़रत इबराहीम से जुड़े ये तीनों मज़ाहिब अमन के साथ रह सकते हैं। इस बात का तजुर्बा जमाअत अहमदिया से ज़्यादा किस को हो सकता है। फिर कहने लगे मुझे इमाम जमाअत के साथ हज़रत-ए-ईसा अलैहिस्सलाम और जमाअत अहमदिया की तालीम नए अह्दनामा और इंजील के बारे में बात करने का अवसर मिला। उनसे बात होती रही और किताब "मसीह हिंदुस्तान में" यह भी उनके पास थी, कहते हैं मैंने आधी पढ़ ली है और पढ़ रहा हूँ। बड़ी दिलचस्प है और मज़ीद रिसर्च करूँगा। कहते हैं इस किताब से हज़रत-ए-ईसा के बारे में भी बहुत सारी नई बातें मुझे पता लग रही हैं। अच्छे पढ़े लिखे हैं और मज़हब से दिलचस्पी रखने वाले हैं। बहरहाल कहते हैं कि नए अह्दनामा और इंजील के बारे में बात करने का अवसर मिला। इस में कोई शक नहीं कि हम जमाअत-ए-अहमदिया से अमन, रहमदिली और मुहब्बत के बारे में बहुत कुछ सीख सकते हैं। मेरी परवरिश कैथोलिक हुई है। मैं अब अमरीकी कांग्रेस में अहमदिया कॉक्स (Ahmadiyya Caucus) का चेयरमैन हूँ। हमारी जमाअत के हक़ में बोलने वाले आवाज़ उठाने वाले जो लोग हैं यह इस कमेटी के चेयरमैन हैं। फिर कहते हैं खासतौर पर दुनिया में अमन फैलाने और क़ौमों में इत्तेहाद क़ायम करने, अदम तशद्दुद, इंतेहापसंदी का ख़ातमा, ग़ुर्बत के ख़ातमा, इक़तेसादी मुसावात, आलमी इन्सानी हुक़ूक़ के लिए और आलमी मज़हबी आज़ादी के लिए आपकी कोशिशों को सराहता हूँ। फिर कहते हैं मुतअद्दिद अहमदी मुस्लमानों को टार्गेट कर के क़तल किया गया। इस ज़ुलम-ओ-सितम की जारी दास्तान के बावजूद इमाम जमाअत ने दूसरों पर इंतेक़ामी तशद्दुद करने से मना फ़रमाया जो एक बहुत अज़ीम है।

फिर कहते हैंका इमाम जमाअत ने बार-बार दुनिया के राहनुमाइ को समझाया कि हक़ीक़ी और देरपा अमन के लिए इन्साफ़ ज़रूरी है। मज़लूम क़ौमों के हुक़ूक़ के लिए आवाज़ उठाई। इस तरह के ख़्यालात का इज़हार उन्होंने किया। काफ़ी लंबे विचार हैं।

एक मेहमान टॉम बैरी (Tom Berry) कहते हैं कि मैं इमाम जमाअत का शुक्रिया अदा करना चाहता हूँ। उनका पैग़ाम, मेहमान-नवाज़ी, बाहमी मेल-जोल सब कुछ बहुत ख़ूब था। निसंदेह यह एक नेअमत है कि अक़ीदे या मज़हब से क़त-ए-नज़र एक दूसरे की ज़्यादा से ज़्यादा भलाई के लिए काम हो। ज़िंदगी की क़दर हो। ज़िंदगी से प्यार हो। इन्सानों का एहतेराम हो। इन्सानों से मुहब्बत हो। यह ज़ाहिर करता है कि ऐसे मुआशरे में किसी एक फ़र्द या इदारे की इजारादारी नहीं है। सबको मिलकर काम करना चाहिए। यही ख़लीफ़ा का पैग़ाम था। यह पैग़ाम ऐसा है कि रोज़ाना सोने से क़बल और सुबह उठने के बाद दोहराना चाहिए और इसी पैग़ाम को फैलाना चाहिए। यही पैग़ाम हमें अपने बच्चों को समझाना चाहिए ताकि जब हम नहीं होंगे तो वह इस पैग़ाम को जारी रखें। मैं आप का फिर शुक्रिया अदा करता हूँ।

फिर एक मुस्लमान मेहमान सुलतान चौधरी साहिब थे। कहते हैं कि इमाम जमाअत ने जो समस्त दुनिया के लिए अमन का पैग़ाम दिया है यह मेरे ख़्याल में एक बेहतरीन पैग़ाम है। मैं समझता हूँ कि यह बहुत ज़रूरी है कि मुस्लमानों के ख़िलाफ़ इस ख़ौफ़ को दूर किया जाए कि वे यहां क़बज़ा कर लेंगे।

उन्होंने वाज़िह किया है कि चूँकि मुस्लमानों को ख़त्म करने की कोई साज़िश नहीं कर रहा, कोई कोशिश नहीं कर रहा इसलिए मुस्लमानों के लिए किसी जंगी मुहिम का कोई जवाज़ नहीं है।

नॉर्थ प्रेस्बिटेरियन चर्च (North Presbyterian Church) से एक मेहमान ख़ातून बेवर्ली मेकार्ड (Beverly McCord) साहिबा आई थीं। कहती हैं ख़लीफ़ा को देखकर, उनकी बातें सुनकर बहुत सुकून मिला। किसी को आलमी अमन के लिए इस तरह कोशिश करते हुए नहीं देखा। बहुत अच्छा एहसास है। अगर लोग अपनी ख़ुदग़रज़ी, किसी पड़ोसी पर ग़लबा पाने या किसी दूसरे के इलाक़े पर क़बज़ा करने या किसी पर ज़ुलम करने के एजंडे के बजाय इस पैग़ाम को सुनें तो दुनिया में अमन हो सकता है। काश हम अमन को फ़रोग़ देने वाली मज़ीद तक़ारीर सुन सकें और लोगों को याद दिलाते रहें कि उन्हें हमेशा अमन की पैरवी करनी चाहिए और काम करना चाहिए।

कोलिन (Collin) काओनटी पुलिस डिपार्टमैंट से भी एक शख़्स लेराए (Le-Roy) साहिब शामिल हुए थे। कहते हैं यह ख़ूबसूरत प्रोग्राम था जिससे मैंने बहुत कुछ सीखा। अहमदिया मुस्लिम कम्यूनिटी ने हक़ीक़तन एक शानदार काम किया है।

फिर एक मुस्लमान मेहमान डाक्टर हलीमुर्रहमान साहिब भी थे। कहते हैं यह बिल्कुल नाक़ाबिल-ए-यक़ीन था। मुझे तक़रीब, इंतेज़ामात, मेहमान-नवाज़ी, पंडाल बहुत अच्छा लगा। कहते हैं मैं इस एहतेराम का मुस्तहिक़ नहीं था जो उन लोगों ने मुझे दिया है। यह सब माहौल देखकर आपकी इज़्ज़त-अफ़ज़ाई से मेरी आँखें नम हो गई हैं। मुझे बेहतरीन इन्सानों के माबैन वक़्त गुज़ारने का अवसर मिला। हक़ीक़ी इन्सान जो कि इस्लाम की हक़ीक़ी तालीमात पर अमल पैरा हैं। यहां बैठ के तो यह बयान देते हैं। पाकिस्तान जाएं तो मौलवी जीने दें।

एक मेहमान अबी करकुंडल (Abby Kirkendall) कहती हैं कि मैंने ऐसी मज़हबी जमाअत देखी जिसकी इबादत का तरीक़ा तो हमसे मुख़्तलिफ़ है लेकिन हमारी इक़दार एक जैसी हैं। मेरे लिए एक शानदार तजुर्बा था। यह मेरे लिए गर्व की था कि मैं इमाम जमाअत जो मज़हबी राहनुमा हैं को ऐसी इक़दार के बारे में बात करते हुए देख रही थी जो कि सब कम्यूनिटीज़ को अपने अंदर समो लेनी चाहिए। फिर कहती हैं यहां आकर मुझे ख़ुदा की मौजूदगी का एहसास हो रहा था और अक़ायद से क़त-ए-नज़र जहां आपको ख़ुदा की मौजूदगी का एहसास हो वहां आपको अमन और सुकून मिलता है जो आज यहां तमाम अफ़राद को मज़हब के मतभेद के और क़ौम और मिल्लत प्राप्त हुई और यही चीज़ है जिसकी ज़रूरत समस्त कम्यूनिटीज़ को है।

फिर एक महिला विक्टोरिया साहिबा कहती हैं मुझे जो चीज़ यहां सबसे ज़्यादा नुमायां लगी वह इमाम जमाअत का ख़िताब था कि किस तरह मज़हबी इख़्तेलाफ़ और मुख़्तलिफ़ नज़रियात के बावजूद हम सब आपस में एक दूसरे से जुड़े हैं।

मेरे ख़्याल में यह एक ऐसी चीज़ है जिसका आजकल बैनुल मज़ाहिब डायलॉग में फ़ुक़दान नज़र आता है और किसी को इतनी हिक्मत और दानाई के साथ इस बारे में बात करते हुए देखकर बहुत ख़ुशी महसूस हुई कि अपने मज़हबी अक़ायद में इख़्तेलाफ़ात के बावजूद तमाम बनीनौ इन्सान एक दूसरे से जड़े हुए हैं और हमें किस तरह आपस में अमन के साथ एक दूसरे का एहसास करते हुए रहना चाहिए।

फिर एक मेहमान महिला थीं मेरी मेकडरमट (Mary McDermott) कहती हैं। यह वहां मस्जिद डैलस में हमारी हमसाई हैं। उनकी बहुत बड़ी ज़मीन है। उन्होंने पार्किंग के लिए जगह भी दी थी। कहती हैं मैं पहले कभी भी ज़मीन के इस मिट्टी भरे टुकड़ेसे इतनी ख़ुश न हुई जितना इस प्रोग्राम के लिए देने पर हुई हूँ। बहुत शरीफुल-नफ़्स और आला अख़लाक़ की महिला थीं। अपनी जगह दे दी उन्होंने बल्कि साफ़ करवा के, ठीक करके, लेवल कर के दी।

फिर एक महिला बेवर्ली मेकार्ड (Beverly McCord) थीं जिन का मैं पहले भी वर्णन कर चुका हूँ। वह कहती हैं मुझे हमेशा आलमी मज़हबी राहनुमाओं को सुनना अच्छा लगता है जो कि लोगों को नियमित अमन की ज़रूरत, बाहमी इख़्तेलाफ़ात के निवारण और मुहब्बत की तरफ़ बुलाते रहते हैं। मुझे हमेशा ऐसे पैग़ाम सुनकर ख़ुशी होती है।

मुझे ज़ाती तौर पर इस जमाअत से कोई ख़ौफ़ नहीं है और दूसरों के ख़ौफ़ज़दा होने की भी कोई वजह समझ नहीं आती क्योंकि यह जमाअत तो बहुत मुहब्बत करने वाली, एहसास करने वाली और हमेशा ख़िदमत-ए-ख़लक़ करने वाली जमाअत है। अगर किसी को कोई ख़ौफ़ हो तब भी इस जमाअत की ख़िदमत-ए-ख़लक़ और फ़लाही कामों को देखकर फ़ौरन दूर हो जाता है।

फिर जोशुआ (Joshua) नामी एक मेहमान थे। कहते हैं आज की इस उद्घाटन के अवसर पर मुझे और दीगर सीनीयर पादरी हज़रात को दावत दी गई हैकि इस तक़रीब में शामिल हूँ और लोगों से बातचीत का अवसर मिले। मैं इस बात को बहुत सराहता हूँ कि यहां किस तरह हिक्मत के साथ अमन, इत्तेहाद और इन्साफ़ के बारे में बात की गई है।

इस बात का एहसास भी हुआ कि ऐसे लोग भी हैं जिनका ताल्लुक़ मुख़्तलिफ़ तहज़ीब और तमद्दुन से है लेकिन वे भी हमारी ज़िंदगियों में ख़ुदा की मौजूदगी और इन्सानों में बाहमी हमदर्दी का प्रचार करते हैं और क्योंकि हमारे आमाल का एक दूसरे पर भी असर होते हैं। इसलिए इस तरह मिल बैठना और खाने खाना और बातें करना ज़रूरी होता है। कहते हैं मैं अपनी पत्नी को बता रहा था कि यहां मेज़बानी बहुत उम्दा थी। यहां पहुंचते ही हर चीज़ आर्गनाइज़्ड लगी।

इसी तरह वहां फोर्ट विरथ (Fort Worth) एक जगह है डैलस (Dallas) से पच्चास पचपन मील की दूरी पर है। वहां भी गए थे

एक छोटी सी मस्जिद, नई जगह ली है। यह जगह तो साढ़े तीन एकड़ है। बिल्डिंग भी काफ़ी बड़ी है। लेकिन इस में मस्जिद नहीं बल्कि इमारत ख़रीदी गई थी। यह जगह तो पौने पाँच एकड़ है, साढ़े तीन नहीं है। और तेराह हज़ार मुरब्बा फुट की एक इमारत भी यहां मौजूद है। मल्टी परपज़ हाल हैं, दफ़ातर हैं, लॉबीज़ शामिल हैं। बहरहाल यहां एक गुम्बद और दो मीनार तामीर करने का प्रोग्राम है ताकि मस्जिद की शक्ल दे दी जाए। ये अच्छी जगह है। वहां अहबाब जमाअत नमाज़ें भी पढ़ते हैं। अच्छी जगह है। मुझे भी वहां नमाज़ मग़रिब इशा पढ़ाने का अवसर मिला।

एक मेहमान अबी किरकुंडल (Abby Kirkendall) साहिबा जिनका पहले भी वर्णन हो चुका है फोर्ट वरथ में रहती हैं, डैलस मस्जिद के उद्घाटन पर आई हुई थीं। कहती हैं इमाम जमात ने ख़ुदा तआला की मंशा के मुताबिक़ एक दूसरे के साथ मिल-जुल कर काम करने का पैग़ाम बहुत ही सुन्दर रंग में दिया। अमन और न्यूक्लीयर जंग से बचाओ का पैग़ाम मेरे लिए ख़ास एहमियत रखता है। उनका यह पैग़ाम कि जो भी इस जंग का हिस्सा बनेगा वह तबाही में जा गिरे गा, बहुत ज़बरदस्त था।

फिर फोर्ट विरथ से ही फ़रस्ट यूनाईटिड मैथोडिस्ट चर्च (First United Methodist Church) की एक मैंबर हैं, यह भी वहां डैलस (Dallas) मैं ही आई हुई थीं। कहती हैं कि पैग़ाम बहुत शानदार था। प्रत्येक को ख़लीफ़ा के इस वाज़िह पैग़ाम को ज़रूर सुनना चाहिए। ख़लीफ़ा के ख़िताब का अंदाज़ भी शानदार था। ख़िताब सुनकर एक लुतफ़ महसूस हुआ मैं उनको दुबारा भी सुनना चाहूंगी।

फिर हाईस्कूल मिनिस्ट्री की एक टीचर हैं। कहती हैं कि ख़लीफ़ा की दो बातों का मुझ पर ख़ास असर हुआ। एक तो यह कि उन्होंने इस बात का एतराफ़ किया कि मुआशरे के अंदर इस्लाम के मुताल्लिक़ वाक़ई तहफ़्फ़ुज़ात मौजूद हैं और बहैसियत एक टीचर होने के मैं यह चीज़ें अपने विद्यार्थियों में गाहे-बा-गाहे देखती रहती हूँ। दूसरी चीज़ जिसको मैंने बहुत सराहा वह ख़लीफ़ा वक़्त का नियुक्लियर हथियारों को इस्तिमाल के मुताल्लिक़ सचेत करना था। आजकल के हालात में इस किस्म का हिक्मत से परिपूर्ण पैग़ाम सुन कर बहुत अच्छा लगा।

तो यह तो थे कुछ लोगों के विचार। अब कुछ और मालूमात हैं, सम्बन्धित बातें हैं, वह भी वर्णन कर देता हूँ। यहां मस्जिद ज़ाइन (Zion) में ही जैसा कि आपने एम.टी.ए में देख भी लिया होगा, डोवी के मुबाहला के हवाले से एक नुमाइश लगाई गई थी और जो अख़बारों ने शाय किया था, इन अख़बारों की कटिंग भी वहां थी। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने मजमूआ इश्तेहारात में बत्तीस 32 अख़बारात के नाम लिखे हैं और साथ तहरीर फ़रमाया है "यह अख़बार सिर्फ़ वह हैं जो हम तक पहुंचे हैं। इस कसरत से मालूम होता है कि सैंकड़ों अख़बारों में यह वर्णन हुआ होगा।" इसलिए जमाअत अमरीका ने इस हवाले से मज़ीद तहक़ीक़ की और मज़ीद अख़बारात तलाश किए। इन बत्तीस अख़बारात के इलावा जिनका वर्णन हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया है मज़ीद एक सौ अट्ठाईस अख़बारात ऐसे मिले हैं जिनमें डोवी को दिए जाने वाले मुबाहले के चैलेंज का वर्णन है। इस तरह इस ज़माने में इन अख़बारात की कुल संख्या160 तक चली गई।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने में अमरीका के 160अख़बारों ने यह बयान दिया। ये समस्त अख़बारात डीजीटल सूरत में मस्जिद फ़तह अज़ीम के साथ लगाई जाने वाली नुमाइश में मौजूद हैं और लोगों ने आ के देखे।

फिर ज़ायन मस्जिद के उद्घाटन की दुनिया ने भी ख़बरें दीं। अमरीकन न्यूज़ एजैंसी एसोसी एटड प्रैस (Associated Press) ने मेरा दौरा ज़ायन जो था और मस्जिद फ़तह अज़ीम के उद्घाटन के हवाले से मज़मून भी शाय किया। इसका शीर्षक था कि Two prophets, century old prayer duel inspire Zion mosque अर्थात ज़ायन की मस्जिद की बुनियाद दो नबियों के दमध्य एक सदी पुराना मुबाहला है। इस मीडीया आउट लुट्स की वेबसाइट के मुताबिक़ तक़रीबन दुनिया की आधी आबादी उसके पाठक हैं। यह मज़मून मजमूई तौर पर दुनिया के तेराह देशों के 412 आउट लुट्स और अख़बारात में शाय हुआ वाशिंगटन पोस्ट के साथ, ए. बी. सी न्यूज़, टोरंटो स्टार, दी हल (The Hill) और बहुत से दूसरे मशहूर अख़बारात हैं। यह मज़मून भी एसोसी एटड प्रैस के टाप दस मज़ामीन में शामिल था। यह नहीं कि तवज्जा नहीं थी बल्कि ये दस अहम मज़्मूनों में शामिल हुआ। शीर्षक में यह बताया गया था कि ज़ायन में 115 साल पहले एक मुक़द्दस मोजिज़ा हुआ था। दुनिया-भर के लाखों अहमदी मुस्लमान इस पर यक़ीन रखते हैं। अहमदी इस छोटे शहर को जो शिकागो से चालीस मील दूर मिशीगन झील के साहिल पर वाक़्य है एक ख़ास मज़हबी एहमीयत देते हैं। इस शहर से अहमदिया जमाअत का लगाओ एक सदी से ज़्यादा पहले मुबाहला और एक भविष्यवाणी के साथ शुरू हुआ था। ज़ायन शहर की बुनियाद 1900 में एक मसीही थे थियोक्रोसी के तौर पर जान इलैगज़ेंडर डोवी ने रखी थी जो एक एवंजलस्ट (Evangelist) और इबतेदाई पैंटी कोस्टिल (Pentecostal) मुबल्लिग़ था। अहमदियों का अक़ीदा है कि उनके बानी हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब ने डोवी के इस्लाम के ख़िलाफ़ बदज़बानी और हमलों के जवाब में इस्लाम का दिफ़ा किया और उसे सिर्फ दुआओं का हथियार प्रयोग करके रुहानी जंग में शिकस्त दी। तक़रीबन समस्त ज़ायन के मौजूदा बाशिंदों को इस पुराने दौर की मुक़द्दस लड़ाई का कोई इलम नहीं है लेकिन अहमदियों के लिए यह मुक़द्दस लड़ाई वह है जिसने शहर ज़ायन के लिए एक अबदी ताल्लुक़ क़ायम किया है। दुनिया-भर से हज़ारों अहमदी मुस्लमान इस सदी पुराने मोजज़े को याद करने के लिए और ज़ायन शहर की तारीख़ और उनके अक़ीदे के एक अहम संग-ए-मील, शहर की पहली अहमदिया मस्जिद के उद्घाटन को मनाने के लिए शहर में जमा हुए। फिर उस मज़मून में और भी आगे लिखता है और डोवी के बारे में उसने उसकी पुरानी तारीख़ काफ़ी वर्णन की है। फिर कहता है कि अहमदियों का अक़ीदा है कि उनके बानी जो 1835 ई. में पैदा हुए वह मुस्लेह थे जिनकी ख़ुशख़बरी इस्लाम के संस्थापक ने दी थी। उनका अक़ीदा यह भी है मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद हज़रत ईसा के मसील के तौर पर आमद सानी हैं। इसके इलावा कैनेडा में दौरा ज़ायन और मस्जिद फ़तह अज़ीम के उद्घाटन की बड़े वसीअ पैमाने पर बहुत कवरेज हुई है।

कैनेडा में अल्लाह के फ़ज़ल से नौ बड़े अख़बारात, छः ऑनलाइन पब्लिकेशनज़ और एक रेडियो-स्टेशन के ज़रीया दौर-ए-ज़ायन की कवरेज हुई। कैनेडा में आठ

लाख सत्तावन हज़ार लोगों तक पैग़ाम पहुंचा। अमरीका, कैनेडा के इलावा यू.के, यूनान , सैरालियुन, तायवान, इंडिया, हांगकांग, पैरौ, फ़िलपाइन, साउथ अफ़्रीक़ा, तनज़ानिया और वेतनाम की आयन लाईन अख़बारात ने भी दी।

अमरीकन न्यूज़ एजैंसी एसोसीएटड प्रैस जिसका मैंने हवाला दिया उसका यह आर्टीकल अमरीका में दो सौ अख़बारात में प्रिंट हुआ और 176 ऑनलाइन अख़बारात में प्रकाशित हुआ।

इस के इलावा एम.टी.ए अफ़्रीक़ा के ज़रीया से भी इस फंक्शन की लाईव कवरेज दी गई। ज़ाइन (Zion) और डैलस (Dallas) में तक़ारीब के अवसर पर जो खुत्बात थे वह गेम्बया नैशनल टी.वी, सैरालियुन नैशनल टी.वी, सेनेगाल टी.वी से लाईव प्रसारित हुए। इस को लाखो लोगों ने देखा। कहते हैं ज़ायन में मस्जिद फ़तह-ए-अज़ीम की तक़रीब से आधा घंटा पूर्व हमारे स्टूडीयोज़ में लाईव नशरियात का आग़ाज़ हुआ जिनके ज़रीया लोकल ज़बानों में इलैगज़ेंडर डो.वी के मुताल्लिक़ हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की भविष्यवाणी का पस-ए-मंज़र वर्णन किया गया। अफ़्रीक़ा भर में न्यूज़ रिपोर्टस के ज़रीया भी, टी.वी रेडीयो और अख़बारात में कवरेज मिली। योगंडा में पाँच चैनल्ज़ और घाना, नाईजेरिया, लाइबेरिया, सैरालियून, रवांडा के टी.वी चैनल्ज़ पर यह न्यूज़ रिपोर्टस हुईं।

अमीर साहिब सैरालियौन लिखते हैं कि उनके बीस साल पुराने एक दोस्त थे जिन्हों ने जलसा सालाना यू.के के अवसर पर इस साल बैअत की थी। जब ज़ायन का प्रोग्राम देखा कहने लगे कि जिस दिन मैंने बैअत की इस रात मुझे बहुत सख़्त अफ़सोस हुआ कि बैअत करने में मुझे इतनी देर क्यों लगी लेकिन अगर मैं सच्च कहूं तो जिस दिन मैंने ज़ायन की मस्जिद का प्रोग्राम देखा मैंने अपने आप को कहा कि अगर अमीर साहिब इलैगज़ेंडर डोवी वाला वाक़िया मुझे पहले सुना देते तो शायद मेरी बैअत बीस साल पहले हो जाती।

मैं कभी भी किसी मज़हबी वाक़िया से इस तरह क़ायल नहीं हुआ जैसा कि ज़ायन की इस भविष्यवाणी से हुआ हूँ। मैंने इस ज़माने का सबसे बड़ा चैलेंज देखा है।

और सबसे बड़ी बात यह है कि यह वाक़िया हमारे ज़माने में मग़रिबी मीडीया की मुकम्मल छानबीन के तहत हुआ है। हज़रत इमाम मह्दी ने मुस्तक़बिल की इस तरह भविष्यवाणी की है कि गोया वह वहां मौजूद थे जहां से ख़ुदा फ़ैसले करता है। फिर कहते हैं कि मेरे ख़्याल में जब भी हम ग़ैर अज़ जमात लोगों को तब्लीग़ करें हमें ज़ायन की भविष्यवाणी का वर्णन ज़रूर करना चाहिए क्योंकि यह एक बहुत प्रभावी भविष्यवाणी और दलील है। जिस दिन मैंने बैअत की उस रात मुझे लगा था कि शायद मैंने सही फ़ैसला किया है परन्तु ज़ायन की भविष्यवाणी के बाद मैंने सुकून का सांस लिया और इस बात पर पूरा यक़ीन हुआ कि मेरी बीस साला हक़ की तलाश व्यर्थ नहीं गई। मैंने यक़ीनन दरुस्त फ़ैसला किया। इस के इलावा फिर वहां जो और activities थीं उनमें वाशिंगटन में, मस्जिद मेरी लैंड में घाना, सैरालियोन के दूतों से भी बातें हुईं। उनके मुल्कों के हालात के बारे में भी बातें हुईं। उनसे अच्छी मीटिंग हो गई। फिर नौ-मुबाइन से भी मीटिंग हुई। पैंतालीस के क़रीब वहां नौ-मुबाइन आए हुए थे। पुराने अमरीकन अहमदियों को भी तलाश करने का मैंने उनको कहा था। उनमें से भी कुछ एक उन्होंने तलाश किए थे और नए बैअत करने वालों की वहां मुख़ालिफ़त भी हुई लेकिन साबित-क़दम रहे।

एक नौ-मुबाइन ने वर्णन किया कि उनकी फ़ैमिली को इलम हुआ तो उन्होंने बहुत मुख़ालिफ़त की। इस के बाद उस को छोड़ के चले गए। फिर बंगलादेश के एक अहमदी हैं वह कहने लगे कि मुझे मुरब्बी साहिब ने बड़ा वक़्त लगा कर बड़े तहम्मुल से समझाया है और अब मुझे समझ आ गई है और फिर बड़े जोश से उन्होंने बाक़ी नौ-मुबाइन को कहा कि मैंने इस्लाम अहमदियत को अब समझा है और मैं तुम्हें बता रहा हूँ कि सही इस्लाम यही है। इसलिए कभी न इसे छोड़ना।

एक नौ-मुबाइन अमरीकन क्रिस्टोफ़र (Christopher) जो ईसाईयत से अहमदी हुए हैं उन्हों ने बैअत के लिए दरख़ास्त की थी इसलिए बैअत भी हुई और बैअत का भी वहां लोगों पर अच्छा असर हुआ। वहां रहने वाले जो पुराने अहमदी थे या बहुत सारे नए लोग, पाकिस्तानी रिफ्यूजीज़ (refugees) मुख़्तलिफ़ मुल्कों से हो के वहां आए हुए हैं, उनको भी बैअत का अवसर मिल गया और बड़ी जज़बाती कैफ़ीयत उसकी वजह से तारी हुई।

बहरहाल अल्लाह तआला के फ़ज़ल से मजमूई लिहाज़ से अल्लाह तआला ने इस दौरे को हर लिहाज़ से अपने फ़ज़लों से नवाज़ा है। अल्लाह तआला भविष्य में भी हमेशा नवाज़ता रहे।

★ ★ ★

पृष्ठ 2 का शेष

किया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के बारे में फ़रमाया ये दोनों सरदार हैं अहल-ए-जन्नत के। अहल-ए-जन्नत के बड़ी उम्र वालों के पहलों में से और आख़रीन में से सिवाए नबियों और रसूलों के। हे अली इन दोनों को न बताना।

(सुंन तिरमज़ी, अबवाब المناقب باب مناقب ابی بکر, रिवायत नंबर : 3664)

रावी कहते हैं कि जब आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने यह रिवायत की तो हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो को बताने से रोक दिया।

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हो से मर्वी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मुहाजेरीन और अंसार में से अपने सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो के पास बाहर तशरीफ़ लाते और बैठे होते और उनमें हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो होते। तो उनमें से कोई भी अपनी नज़र आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की तरफ़ न उठाता सिवाए हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के। वे दोनों आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की तरफ़ देखते और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उनकी तरफ़ देखते और वे आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की तरफ़ देखकर मुस्कुराते और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उन दोनों को देखकर मुस्कुराते।

(सुंन अल् तिर्मेज़ी, अबवाब अल् मनाकिब, बाब मनाक़िब अबी बकर, रिवायत नंबर : 3668)

हज़रत इब्न-ए-उम्र से मर्वी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो से फ़रमाया तुम हौज़ पर मेरे साथी हो और ग़ार में मेरे साथी हो।

(सुंन अल् तिर्मेज़ी, अबवाब अल् मनाकिब, बाब मनाक़िब अबी बकर, रिवायत नंबर : 3670)

हज़रत जुबैर बिन मुतअम रज़ियल्लाहु अन्हो ने वर्णन किया कि एक औरत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आई, आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से किसी चीज़ के बारे में बात की। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस के बारे में कोई इरशाद फ़रमाया। उसने अर्ज़ किया कि हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का क्या ख़्याल है अगर मैं आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को ना पाऊं अर्थात आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बाद, वफ़ात के बाद अगर मुझे ज़रूरत हो तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया अगर मुझे न पाओ तो अबू बकर के पास आना।(सुंन अल् तिर्मेज़ी, अबवाब अल् मनाकिब बाब मनाकब अबी रिवायत नम्बर : 3676) वह तुम्हारी ज़रूरत पूरी कर देगा।

हज़रत इब्न-ए-उम्र से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक रोज़ बाहर तशरीफ़ लाए और मस्जिद में दाख़िल हुए और हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो इन दोनों में से एक आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के दाएं जानिब था और दूसरा आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बाएं जानिब और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उन दोनों के हाथ पकड़े हुए थे और फ़रमाया। इस तरह हम क़ियामत के रोज़ उठाए जाऐंगे।

(सुंन अल् तिर्मेज़ी, किताब अल् मनाकिब, मनाकिब अबी बकर, नंबर : 3669)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन हनतब से मर्वी है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को देखा और फ़रमाया ये दोनों कान और आँखें हैं अर्थात मेरे क़रीबी साथियों में से हैं।

(सुंन अल् तिर्मेज़ी, किताब अल् मनाकिब, मनाकिब अबी बकर, हदीस नंबर : 3671)

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हर नबी के आसमान वालों में से दो वज़ीर होते हैं और ज़मीन वालों में से भी दो वज़ीर होते हैं। आसमान वालों में से मेरे दो वज़ीर जिबरईल और मीकाईल हैं और ज़मीन वालों में से मेरे दो वज़ीर अबू बकर और उमर हैं।

(सुंन अल् तिर्मेज़ी, किताब अल् मनाकिब, मनाकिब अबी बकर् सिद्दीक़, नंबर : 3680)

फिर आप रज़ियल्लाहु अन्हो को जन्नत की बशारत भी दी। सईद बिन मुसय्यब ने कहा हज़रत अबू मूसा अशरी रज़ियल्लाहु अन्हो ने मुझे बताया कि उन्होंने अपने घर में वुज़ू किया। फिर बाहर निकले और कहा मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ लगा रहूँगा और आज सारा दिन आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ ही रहूँगा। अर्थात वह दिन उन्होंने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ख़िदमत के लिए वक़्फ़ कर दिया। उन्होंने कहा कि वह मस्जिद में आए और उन्होंने नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की विषय पूछा। लोगों ने कहा कि बाहर निकले हैं और इस तरफ़ गए हैं। कहते हैं कि मैं आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पीछे चला गया। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के विषय में पूछता पुछाता रहा यहां तक कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बेअरा (मस्जिद क़बा के क़रीब एक कुँआं

था) में दाख़िल हो गए। मैं दरवाज़े के पास बैठ गया और उसका दरवाज़ा खजूर की शाख़ों का था। जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हाजत से फ़ारिग़ हुए तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने वुज़ू किया और मैं उठकर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तरफ़ गया तो क्या देखा कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बेअरा पर बैठे हैं और इस की मुंडेर के वस्त में थे और अपनी पिंडुलियों से कपड़ा उठाए हुए थे और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इन दोनों को कुँवें में लटकाए हुए थे अर्थात अपने दोनों पांव लटकाए हुए थे। मैंने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को सलाम किया। फिर वापस मुड़ा और दरवाज़े पर बैठ गया। मैंने कहा आज मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का दरबान बनूँगा। इतने में हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो आए और उन्होंने दरवाज़े को धकेला। मैंने पूछा यह कौन है? उन्होंने कहा अबू बकर। मैंने कहा ठहरिए। फिर मैंने जा कर कहा हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो वसल्लम! अबू बकर हैं जो इजाज़त चाहते हैं। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया उन्हें इजाज़त दो और उनको जन्नत की बशारत दो। मैं आया यहां तक कि मैंने हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो से कहा अंदर आ जाएं और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम आप रज़ियल्लाहु अन्हो को जन्नत की बशारत देते हैं। हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो अंदर आए और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की दाएं तरफ़ आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ मुंडेर पर बैठ गए। उन्होंने भी अपने पांव कुँवें में लटका दिए जैसा कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने किया था और अपनी पिंडुलियों से कपड़ा उठा लिया। फिर में वापस आया और बैठ गया और मैं अपने भाई को छोड़कर आया था कि वुज़ू करके मुझसे आ मिले। मैंने दिल में कहा कि अगर अल्लाह अमुक के बारे में भलाई का इरादा रखता है, उनकी मुराद अपने भाई से थी। तो वह उसको ले आएगा। क्या देखा कि कोई इन्सान दरवाज़े को हिला रहा है। मैंने कहा यह कौन है? उसने कहा उम्र बिन ख़त्ताब। मैंने कहा ठहरिए। फिर मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आया और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को सलाम किया और मैंने कहा उम्र बिन ख़त्ताब हैं। वह इजाज़त चाहते हैं। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया उन्हें इजाज़त दो और उनको जन्नत की बशारत दो। मैं आया। मैंने कहा अंदर आएं और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आपको जन्नत की बशारत दी है। वह अंदर आए और मुंडेर पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बाएं तरफ़ बैठ गए और अपने पांव कुँवें में लटका दिए। फिर मैं लौट आया और बैठ गया। मैंने कहा अगर अल्लाह ने अमुक की बेहतरी चाही तो उस को ले आएगा। दुबारा अपने भाई के बारे में सोचा। इतने में एक आदमी आया। वह दरवाज़े को हिलाने लगा। मैंने कहा यह कौन है? उन्होंने कहा उसमान बिन अफ्फान। मैंने कहा ठहरिए। मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास गया। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख़बर दी। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया उनको इजाज़त दो और उनको जन्नत की बशारत दो। और हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो के बारे में साथ यह भी फ़रमाया कि बावजूद इस एक बड़ी मुसीबत के जो उन्हें पहुँचेगी उनको जन्नत की बशारत दो। मैं उनके पास आया और मैंने उनसे कहा अंदर आएं और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आप रज़ियल्लाहु अन्हो को जन्नत की बशारत दी है बावजूद एक बड़ी मुसीबत के जो आप रज़ियल्लाहु अन्हो को पहुँचेगी। वह अंदर आए और देखा कि मुंडेर का एक किनारा भर गया है तो वह आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सामने दूसरी तरफ़ बैठ गए। (सही बुख़ारी, किताब फ़ज़ायल अस्हाबुन्नबी (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम), لَوْ كُنْتُ مُتَّخِذًا خَلِيلًا، हदीस नंबर : 3674)(फ़र्हंग सीरत, पृष्ठ : 70 ज़व्वार अकैडमी कराची 2003 ई.)

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अहद पर चढ़े और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो थे तो वह हिलने लगा। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अहद! ठहर जा। मैं समझता हूँ कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस पर अपना पांव भी मारा क्योंकि तुम पर और कोई नहीं केवल एक नबी और एक सिद्दीक़ और दो शहीद हैं।

(सही बुख़ारी, किताब अस्हाब नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम बाब मनाक़िब उसमान बिन अफ्फान रज़ियल्लाहु अन्हो, हदीस : 3699)

हज़रत सईद बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हो बयान करते हैं कि मैं नौ 9 लोगों के बारे में इस बात की गवाही देता हूँ कि वे जन्नती हैं और अगर दसवीं के बारे में भी यही कहूं तो गुनहगार नहीं हूँगा। उन्होंने कहा कैसे? उन्होंने कहा कि हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ हिरा पहाड़ पर थे तो वह हिलने लगा। पहली रिवायत बुख़ारी की थी यह तिरमिज़ी की है और इस में हिरा का वर्णन है। इस पर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ठहरा रह हे हिरा यक़ीनन तुझ पर एक नबी या सिद्दीक़ या शहीद हैं। किसी ने पूछा वे दस जन्नती लोग कौन हैं। हज़रत सईद बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम, अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो, उमर रज़ियल्लाहु अन्हो, उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो, अली रज़ियल्लाहु अन्हो, तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हो, ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हो , साद रज़ियल्लाहु अन्हो और अब्दुर रहमान बिन ओफ रज़ियल्लाहु अन्हो हैं और कहा गया कि दसवाँ कौन है तो सईद बिन ज़ैद ने कहा वह मैं हूँ। (सुंन अल् तिर्मेज़ी, किताब अल् मनाकिब, बाब मनाक़िब सईद बिन ज़ैद, हदीस : 3757) (ओसोदुल गाबा, भाग 2 पृष्ठ : 478 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत : 2003 ई.)

यहां यह भी वाज़िह हो जाए कि इस रिवायत में इन दस महान सहाबा का वर्णन है जिनको नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनकी ज़िंदगी में जन्नत की बशारत दे दी थी। ये आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुक़र्रब भी थे और मुशीर भी थे जिनको सीरत की इस्तिलाह में अशरा मुबशरा कहते हैं अर्थात दस वे लोग जिन्हें जन्नत की बशारत दी गई थी लेकिन यह मद्द-ए-नज़र रहे कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सिर्फ दस के बारे में ही जन्नत की बशारत नहीं दी थी बल्कि इसके इलावा भी असंख्य ऐसे सहाबा और सहाबियात हैं जिनको आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जन्नत की ख़ुशख़बरी दी थी।

इसलिए इन दस के इलावा कम-ओ-बेश पच्चास के क़रीब सहाबाअ और सहाबियात के नामों का वर्णन भी मिलता है। इसके इलावा जंग-ए-बदर में शामिल होने वालों जो कि तीन सौ तेराह के क़रीब थे और जंग अहद में शामिल होने वालों और बैअत-ए-रिज़वान सुलह हुदैबिया के अवसर पर शामिल होने वालों के मुताल्लिक़ भी जन्नत की ख़ुशख़बरी दी गई थी।

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि तुम में से आज कौन रोज़ादार है? हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो ने अर्ज़ किया कि मैं। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कौन तुम में से आज जनाज़े के साथ गया? हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो ने अर्ज़ किया कि मैं। हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तुम में से किस ने आज किसी मिस्कीन को खाना खिलाया? हज़रत अबूबकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने अर्ज़ किया मैंने। हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तुम में से किस ने आज किसी मरीज़ की अयादत की? हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने अर्ज़ किया कि मैंने। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया।

जिस आदमी में ये सब बातें जमा हो गईं वह जन्नत में दाख़िल हो गया। (सही मुस्लिम, किताब फ़ज़ायल सहाबा, बाब मनाकिब फ़ज़ायल अबी बकर रज़ियल्लाहु अन्हो, नंबर 4386 अनुवाद उर्दू, मुद्रित फ़ाउंडेशन, भाग 13 पृष्ठ : 7) यह सही मुस्लिम का हवाला है।

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हो से मर्वी है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया। जिब्रील मेरे पास आया और उसने मेरा हाथ पकड़ा और मुझे जन्नत का वह दरवाज़ा दिखाया जिससे मेरी उम्मत दाख़िल होगी। हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो ने अर्ज़ काश! मैं भी आपके साथ होता ताकि में भी उसे देखता तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया अबू बकर! तुम मेरी उम्मत में से सबसे पहले हो जो जन्नत में दाख़िल होगे।(कन्ज़ुल उम्माल,भाग 6 हिस्सा 11पृष्ठ 544 फ़ज़ल अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो, हदीस नंबर : 32551 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2004 ई.)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो इसी बात को बढ़ाते हुए फ़रमाते हैं कि "रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक दफ़ा मज्लिस में तशरीफ़ रखते थे और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के इर्द-गिर्द सहाबा कराम बैठे हुए थे कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने यह वर्णन करना शुरू कर दिया कि जन्नत में यूं होगा, यूं होगा और फिर इन इनामात का वर्णन फ़रमाया जो अल्लाह तआला ने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के लिए मुक़द्दर फ़रमाए हैं। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने जब यह सुना तो फ़रमाने लगे या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! दुआ कीजिए कि जन्नत में में भी आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ हूँ। (बाअज़ रिवायतों में एक और सहाबी का नाम आता है और बाअज़ रिवायतों में हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो का नाम है) रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मैं उम्मीद करता हूँ कि तुम मेरे साथ होगे और मैं अल्लाह तआला से दुआ भी करता हूँ कि ऐसा ही हो। जब रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह फ़रमाया तो क़ुदरती तौर पर बाक़ी सहाबा के दिल में भी यह ख़्याल पैदा हुआ कि हम भी रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से अर्ज़ करें कि हमारे लिए भी यही दुआ की जाए। पहले तो वे इस ख़्याल में थे कि हमारे यह कहाँ नसीब हैं कि हम जन्नत में रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ हों परन्तु जब हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु या बाअज़ रिवायतों के मुताबिक़ किसी और

सहाबी ने यह बात कह दी और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनके लिए दुआ भी फ़रमाई थी तो अब उन्हें नमूना मिल गया और उन्हें पता लग गया कि यह अमल नामुमकिन नहीं बल्कि मुम्किन है। इसलिए एक और सहाबी खड़े हुए और उन्होंने कहा हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मेरे लिए भी दुआ फ़रमाएं कि ख़ुदा तआला जन्नत में मुझे आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ रखे। फ़रमाया : ख़ुदा तआला तुम पर भी फ़ज़ल करे मगर जिसने पहले कहा था अब तो वह दुआ ले गया।"

(ख़ुतबात-ए-महमूद, भाग 19 पृष्ठ : 427-428)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन फ़रमाते हैं कि "एक दफ़ा रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो शख़्स अमुक इबादत में ज़्यादा हिस्सा लेगा वह जन्नत के अमुक दरवाज़ा से गुज़ारा जाएगा और जो अमुक इबादत में ज़्यादा हिस्सा लेगा वह अमुक दरवाज़ा से गुज़ारा जाएगा। इसी तरह आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मुख़्तलिफ़ इबादात का नाम लिया और फ़रमाया जन्नत के सात दरवाज़ों से मुख़्तलिफ़ आमाल हसना पर ज़्यादा ज़ोर देने वाले लोग गुज़ारे जाऐंगे। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु भी उस मज्लिस में बैठे थे। उन्होंने अर्ज़ किया कि हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मुख़्तलिफ़ दरवाज़ों से तो वह इस लिए गुज़ारे जाऐंगे कि उन्होंने एक एक इबादत पर-ज़ोर दिया होगा लेकिन हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अगर कोई शख़्स सारी इबादतों पर ही ज़ोर दे तो उसके साथ क्या सुलूक किया जाएगा।

आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया वह जन्नत के सातों दरवाज़ों से गुज़ारा जाएगा और हे अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो मैं उम्मीद करता हूँ कि तुम भी उन्ही में से होगे

(ख़ुतबात-ए-महमूद, भाग 18, पृष्ठ : 624)

यह वर्णन तो इंशा अल्लाह आगे चलेगा। इस वक़्त मैं कुछ मरहूमीन का वर्णन करना चाहता हूँ और उनके जनाज़े भी बाद में पढ़ाऊंगा।

पहला वर्णन है श्रीमान अब्दुल बासित साहिब जो अमीर जमाअत इंडोनेशिया थे। 8 अक्तूबर को इकहत्तर वर्ष की आयु में वफ़ात पा गए। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। यह मौलवी अब्दुल वाहिद समाटरी साहिब के बेटे थे और एफ़. ए. तक तालीम हासिल करने के बाद इक्कीस वर्ष की आयु में 20 सितंबर 1972 ई. को जामिआ अहमदिया रब्वः में दाख़िल हुए। 1981 ई. के आग़ाज़ में जामिआ अहमदिया रब्वः से शाहिद का इमतेहान पास किया। 1981 ई. को बतौर मुबल्लिग़ अपने मुल्क इंडोनेशिया वापस तशरीफ़ ले गए। 87 ई. में मजलिस-ए-आमला इंडोनेशिया के मश्वरा से तजवीज़ हुआ कि थाईलैंड में तब्लीग़ के पेश-ए-नज़र एक इंडोनेशियन मुबल्लिग़ को कवाला लम्पूर मलेशिया की नेशनेल्टी हासिल कर के थाईलैंड में तब्लीग़ के लिए भेजा जाए तो उनका नाम पेश हुआ। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्ला ने मंज़ूरी फ़रमाई और ईः वहां थाईलैंड चले गए। बाद में फिर उनका तक़र्रुर इंडोनेशिया में हो गया और तादम-ए-आख़िर यह इंडोनेशिया में ही रहे और एक लंबा अरसा अमीर के तौर पर ख़िदमत की तौफ़ीक़ पाई। चालीस साल तक उनका ख़िदमत का अरसा है। पीछे रहने वालों में उनकी पत्नी के इलावा तीन बेटे और दो बेटियां शामिल हैं।

उनकी पत्नी मूसली वाती (musliwati) साहिबा कहती हैं कि मरहूम सिलसिले का बहुत दर्द रखते थे और जमाअत को हर चीज़ पर हमेशा तर्जीह देते थे। बहैसीयत बीवी मैं उनकी जमात की लगन और ख़िदमात का एतराफ़ करती हूँ। उनके एक भतीजे ताहिर साहिब हैं। वह कहते हैं मरहूम मर्कज़ से आने वाली हिदायत की मुकम्मल तौर पर इताअत करते। एक दफ़ा मरहूम ने बताया कि फ़ैमिली से मिलने के लिए मलेशिया जाने का प्रोग्राम था, इसके लिए हवाई जहाज़ का टिकट भी ख़रीदा हुआ था लेकिन कहते हैं तक़रीबन एक हफ़्ता के बाद जब मैं दुबारा मिला तो पूछा आप मलेशिया क्यों नहीं गए? तो उन्होंने उत्तर दिया कि मर्कज़ की तरफ़ से जो ख़त मौसूल हुआ है इस में जाने की इजाज़त नहीं मिली। इसलिए मैंने मलेशिया जाने का इरादा तर्क कर दिया है और टिकट की भी कोई पर्वा नहीं की। उनके साथ काम करने वाले एक ओहदेदार हैं, वह कहते हैं बड़े प्यार से, मुहब्बत से हमें सिखाते और समझाते। अमीर जमाअत होने के बावजूद जमाअत से सहूलतें नहीं मांगते थे। जमाअत की तरफ़ से जो भी मिलता बख़ुशी इस्तिमाल करते। सादगी को तर्जीह देते। दफ़्तरी औक़ात में कई दफ़ा ख़ुद हमारे पास आकर बैठ जाते और ख़ुतूत को मुलाहिज़ा कर के नोट लिखवाते थे। मुबल्लेगीन का बहुत सम्मान करते थे। बहुत गहरा और वसीअ इलम रखने वाले थे। हमेशा जब भी कोई फ़ैसला करते तो आमला के मैंबरान से हमेशा मश्वरा तलब किया करते। बावक़ार मगर आजिज़ी से भरे हुए वजूद थे। निहायत मिलनसार और प्रत्येक बड़े छोटे से ख़ुशख़ुलक़ी से पेश आते थे। ख़िलाफ़त से बे-इंतिहा मुहब्बत थी। हमें तलक़ीन करते थे कि ख़लीफ़-ए-वक़्त के हुक्म पर अपनी सब आरा को छोड़कर फ़ौरन अमल करना चाहिए। जमाती निज़ाम को फ़ौक़ियत देते थे। जमाती अम्वाल पर गहरी नज़र और भरपूर हिफ़ाज़त करने वाले थे। किसी भी ख़िलाफ़-वरज़ी पर आप सख़्ती से पेश आते थे। अक्सर दूसरे कारकुनों से पहले दफ़्तर आते थे। अगर किसी वजह से दफ़्तर न आ सकते या देर से आते तो स्टाफ़ को ज़रूर सूचना देते थे बल्कि जब आप दफ़्तर से किसी मुआमले के लिए बाहर जाते ख़ाह थोड़ी देर के लिए जाएं तो फिर भी दफ़्तर के अमले को सूचना ज़रूर दे के जाते थे। रिपोर्टस या ख़ुतूत को चैक करते वक़्त मरहूम निहायत मुहतात थे। मुकम्मल तौर पर प्रत्येक चीज़ को देखते थे और अगर फ़ौरी काम की ज़रूरत होती तो रात देर तक काम में व्यस्त रहते। अहमदियों से मिलने के लिए जाते तो अहमदी कहते हैं कि हमारे बच्चों के लिए हमेशा तोहफ़े साथ लेकर जाया करते थे। हमेशा प्यारो मुहब्बत का सुलूक करते। एक ऐसे राहनुमा थे जो हमेशा दूसरों को ख़ुश करने की कोशिश करते थे। अमीर साहिब हमारे लिए और इंडोनेशिया के अहमदियों के लिए गोया रुहानी बाप थे। जमाती निज़ाम और रिवायात को हमेशा तर्जीह देते थे। और यही ख़सुसीआत हैं जो एक अमीर में होनी चाहिऐं। जब नाराज़ हो जाते तो प्रत्येक की इज़्ज़त का भी ख़्याल रखते। यह नहीं कि नाराज़गी में जो चाहा कह दिया। सज़ा देते वक़्त इस्लाह का पहलू हमेशा मद्द-ए-नज़र होता था। कोई दुश्मनी नहीं होती थी, कीना नहीं होता था बल्कि इस्लाह उद्देश्य थी। फिर कहते हैं बहुत सारे अहमदी यहां अपने जमाअती या ज़ाती काम में आप से राहनुमाई तलब करते थे। आपने ग़ैरमामूली मेहनत और मुहब्बत के साथ अहबाब-ए-जमाअत इंडोनेशिया का ख़्याल रखा। पिछले एक साल से बीमार थे। अपनी बीमारी के दिनों में भी हसब-ए-मामूल मुख़्तलिफ़ मीटिंगज़ और राबिता और दौराजात में जमाअती ख़िदमात अदा करते रहे। इस में कमी नहीं आने दी।

महमूद वर्दी साहिब जो इंडोनेशियन डैसक में यहीं लंदन में रहते हैं। कहते हैं कि मिज़ाज के बाअज़ पहलू बहुत नुमायां हैं जिनमें से सबसे नुमायां उनका दीनी इलमी है। बड़े इलमदोस्त आदमी थे। हर समय हुसूल-ए-इलम का शौक़ था। मुख़्तलिफ़ मौज़ूआत के बारे में वसीअ मालूमात रखते थे। जिस टॉपिक पर भी बात होती वह उस पर अच्छी गुफ़्तगु करने पर महारत रखते थे। जमाअती कुतुब पर आधारित उलूम के इलावा बाक़ी जनरल नॉलिज पर भी उनको उबूर था। बाक़ायदगी से अख़बारात का अध्यन करते रहते। नैशनल और इंटरनैशनल हर किस्म की ख़बरें पढ़ते। चाहे वे इंडोनेशियन में हों या इंग्लिश में हों। तक़रीर करते हुए ज़्यादा लंबी चौड़ी तक़रीर नहीं करते थे। हमेशा मुख़्तसर ख़िताब करते और तक़रीर में लोगों को अपनी बात सादा शब्दों में समझा दिया करते। हर वर्ग के लोग आराम से उनकी कही हुई बात समझ सकते थे। फिर कहते हैं प्रतिदिन लिबास बड़ा सादा था लेकिन बावक़ार इन्सान थे। किसी किस्म का तकल्लुफ़ या बनावट बिल्कुल नहीं था। हर वर्ग के लोग उनके साथ बैठ कर बे-तकल्लुफ़ी से बात कर लिया करते थे लेकिन हमेशा सब उनकी इज़्ज़त और सम्मान और हिफ़्ज़-ए-मरातिब का ख़्याल रखते हुए उनके साथ बात किया करते थे।

फ़ज़ल-ए-उम्र फ़ारूक़ साहिब वहां मुरब्बई सिलसिला हैं, जामिआ में उस्ताद भी हैं। कहते हैं कि मैं तिफ़्ल के दिनों से अमीर साहिब के क़रीब रहा। जब जमाअत इंडोनेशिया निहायत मुश्किल दौर में थी तो आप मेहनत और सब्र और तहम्मुल से समस्त जमात के लोगों की हौसला-अफ़ज़ाई करते। उन्हें सब्र और दुआ की तलक़ीन करते रहे। जब भी दुआ करते तो बड़े दर्द और ख़ुशू से करते थे। हमेशा वक़्त पर नमाज़ के लिए मस्जिद में आते। वाकफ़ीन-ए-ज़िंदगी का बहुत ख़्याल रखते थे। जब कोई मुरब्बी मैदान-ए-अमल में जाने लगता तो आप अपनी तरफ़ से उसको कोई न कोई तोहफ़ा ज़रूर देते।

सैफुल्लाह मुबारक साहिब हैं, यह भी जामिआ के उस्ताद हैं। ये कहते हैं कि मौलाना अब्दुल बासित साहिब वाकफ़ीन-ए-ज़िंदगी के लिए एक आला नमूना थे। जमाअत के हर प्रोग्राम में हमेशा शामिल होते थे। प्रत्येक के साथ नरमी और एहतेराम से बात करते थे। किसी भी मज्लिस में जाते तो आपके आने से रौनक हो जाती थी। मुस्कुराते रहते। कहते हैं जब जामिआ इंडोनेशिया में पढ़ता था तो मग़रिब के बाद हमारे साथ बैठते और हालचाल पूछते और हल्की फुल्की बातें होतीं।

फिर नुरुद्दीन साहिब मुरब्बी सिलसिला हैं, उन्होंने भी यह लिखा है कि ऐसे अमीर थे जो अपना नमूना पेश किया करते थे। मौसूफ़ यह कहते हैं कि 2018 ई. में हमारी मस्जिद का संग-ए-बुनियाद रखा। उस वक़्त हमारे पास छः करोड़ रुपय की रक़म थी। इंडोनेशियन रुपया की क़ीमत बहुत कम है तो करोड़ों और बिलीयनज़ में बातें होती हैं वहां। इस लिहाज़ से कहते हैं छः करोड़ की रक़म थी जबकि मस्जिद के लिए तक़रीबन डेढ़ अरब रुपय की ज़रूरत थी। उन्हों ने नसीहत करते हुए कहा कि मस्जिद की तामीर करने के लिए जितना भी बजट मुहय्या होता है उसी से तामीर शुरू करते हैं लेकिन इस के बाद हम अल्लाह तआला की मदद का नज़ारा देखेंगे। अगर डेढ़ अरब इंडोनेशियन रुपया है तो कोई डरने की ज़रूरत नहीं। छः करोड़ तुम्हारे पास है। शुरू कर दो। 1/10 भी नहीं था। तीन फ़ीसद बल्कि चार फ़ीसद था। यह नसीहत

करने के बाद कहते हैं मौसूफ़ ने अपनी जेब से बटुआ निकाल कर हमें मस्जिद के लिए कुछ रक़म दी। यहीं से अहबाब जमाअत ने भी बढ़- चढ़ कर अपनी बेहतरीन क़ुर्बानी पेश करनी शुरू कर दी। यहां तक कि दो साल के अंदर मस्जिद की तामीर अस्सी फ़ीसद मुकम्मल हो गई। फिर यह pandemic का ज़माना आ गया। लोगों की आमदनी कम हो गई फिर मस्जिद की तामीर रुक गई। कहते हैं फिर हम उनके पास गए और बताया कि मस्जिद की तामीर मुकम्मल करना चाहते हैं लेकिन तक़रीबन पंद्रह करोड़ रुपय की, डेढ़ सौ मिलियन की ज़रूरत है। हमें उम्मीद थी कि मर्कज़ हमारी मदद कर देगा लेकिन अमीर साहिब ने कहा मर्कज़ मदद नहीं करेगा। आप लोग किसी से मांगे बग़ैर यह रक़म पूरी कर सकते हैं। फिर उन्होंने पूछा कितने अहमदी हैं। मैंने कहा 160 अहमदी हैं। यह सुनकर उन्होंने बड़े आराम से मुस्कुराते हुए कहा कि प्रत्येक शख़्स से कहा कि दस मिलियन ये तक़रीबन सौ पाऊंड सवा सौ पाऊंड बुनते होंगे दे दें तो यह रक़म पूरी हो सकती है। कहते हैं शुरू में हमें यक़ीन नहीं था कि यह काम इतनी आसानी से हो सकता है लेकिन जब हमने इस नसीहत पर अमल करना शुरू किया तो अल्लाह तआला ने अहबाब-ए-जमात के दिलों में एक मुहब्बत और जज़बा डाल दिया वह अपने बेहतरीन माल मस्जिद की तामीर के लिए पेश करें। इसके इलावा मौसूफ़ ने फिर भी ख़ुद अपनी तरफ़ से काफ़ी रक़म पेश फ़रमाई। इसलिए तीन साल के अंदर फ़रवरी में मस्जिद मुकम्मल हो गई।

फिर अपने नहीं ग़ैरों के साथ भी उनके ताल्लुक़ात थे। लुक़्मान हकीम सैफ़ुद्दीन साहिब साबिक़ वज़ीर मज़हबी उमूर (ये अहमदी हैं) कहते हैं कि मरहूम को नैशनल सतह पर एक शख़्सियत समझता हूँ जो हमेशा इन्सानियत को मुक़द्दम रखते थे। आप कहीं भी जाते हमेशा इस बात पर-ज़ोर देते थे कि किस तरह हम इन्सानियत की इज़्ज़त, बाहमी बर्दाश्त और प्रत्येक का ख़्याल रख सकते हैं। कहते हैं कि मेरे नज़दीक ये सब बातें हम सबकी ज़िम्मेदारी हैं। न कि सिर्फ अहमदियों की बल्कि सब इंडोनेशियन की ज़िम्मेदारी है कि हम उनके नक़श-ए-क़दम पर चलें और जो भी नसाएह उन्होंने हमें की हैं उन पर अमल करने की कोशिश करें। जितने भी इख़तेलाफ़ात और फ़र्क़ हमारे दरमयान हैं वे सब आपस में नफ़रत फैलाने और इन्सानियत की इज़्ज़त को गिराने का बायस बनते हैं उन्हें दूर करें।

इंडोनेशिया में तियूस के सफ़ीर ज़हीरी (zuhairi) साहिब लिखते हैं कि मैंने अमीर साहिब से ये बात सीखी कि किस तरह हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आपके अहल-ए-बैत और उल्मा से मुहब्बत करें और उनकी आला तालीमात पर अमल करें। जबकि अहमदियों पर ज़ुलम किया गया, गालियां दी गईं। इंडोनेशिया में बहुत ज़ुलम हुआ और बड़ी हिम्मत से उन्होंने वह जो दौर था वह वहां गुज़ारा है और बड़े तरीक़े से सब अहमदियों को सँभाला। बहरहाल ये लिखते हैं कि जबकि अहमदियों पर ज़ुलम किया गया, गालियां दी गईं और नाइंसाफ़ी का सुलूक किया गया फिर भी अमीर साहिब ने हमें यह सिखाया कि किसी भी हालत में हमें इख़लास-ओ-वफ़ा के साथ दीन, मुल्क और इन्सानियत की ख़िदमत करनी चाहिए क्योंकि पूरी दुनिया के अहमदियों का एतिक़ाद यह है कि love for all, hatred for none मैं गवाही देता हूँ कि अमीर साहिब अल्लाह तआला के महबूब, सादा-मिज़ाज और इख़लाक़ वाले व्यक्ति थे।

फिर नैशनल सतह पर एक तंज़ीम की राहनुमा नया (nia) शरीफ़ुद्दीन साहिबा लिखती हैं कि अमीर साहिब की बात करने का अंदाज़ बहुत ही गहरा असर करने वाला था। जबकि नरमी और अदब के साथ बात करते थे। फिर भी इस में वतन से प्रेम के जज़बात नुमायां थे। गोया उनकी बातों से love for all, hatred for none ज़ाहिर है। हम गवाही देते हैं कि मरहूम अच्छे आदमी थे और ऐसे लीडर थे जो हमेशा ईमान और प्रत्येक से मुहब्बत के जज़बात के साथ बात करते थे।

मेराजुद्दीन शाहिद साहिब लिखते हैं कि अमीर की हैसियत से उनकी क़ियादत के दौरान जमाअत-ए-अहमदिया इंडोनेशिया को बहुत ज़्यादा मुख़ालिफ़त का सामना करना पड़ा और इंडोनेशिया में कई मुक़ामात पर अहमदियों पर हमले हुए। उन्होंने बड़ी बहादुरी और सुकून के साथ उनका सामना किया। सरकारी आफ़सरान भी उनका एहतराम करते थे। ये उनके अच्छे रवाबित की बदौलत है।

प्रिंसिपल जामिआ अहमदिया इंडोनेशिया मासूम साहिब लिखते हैं कि अमीर साहिब ख़िलाफ़त के फ़िदाई थे। हमसाया होने के नाते अक्सर औक़ात नमाज़ के लिए मेरे साथ मस्जिद जाते थे। वह जब भी दौरे के लिए जाते तो ज़रूर बताते कि अमुक जमाअतों के दौरे पर जा रहा हूँ और मुझे भी कहा करते थे कि जाया करो। जामिआ अहमदिया का ख़ास ख़्याल करते थे। जामिआ अहमदिया बोर्ड मैंबर की हैसियत से तलबा का इंटरव्यू लेते वक़्त हमेशा तलक़ीन करते थे कि आप लोगों ने मुबल्लिग़ बनना है इसलिए जमाअतों के लिए हर लिहाज़ से नमूना बनने की कोशिश करें और कहते हैं मुझे भी हिदायत करते थे और प्रत्येक के बारे में इन्फ़रादी तौर पर भी बताते थे कि अमुक तालिब-ए-इलम में यह कमी है। उसको पूरा करवाने की पूरी कोशिश करें। जामिआ के तलबा से दिलचस्पी थी।

इरशाद मलही साहिब अमरीका में मुरब्बी सिलसिला हैं। कहते हैं मैं बासित साहिब का जामिआ में क्लास फ़ैलो था और रुम मेट भी था। मुझे उनको बहुत क़रीब से देखने का मौक़ा मिला। बहुत ज़ीरक और कमाल दर्जा के ज़हीन, ख़ुश-मिज़ाज, मिलनसार, हँसमुख तबीयत के मालिक थे। बैडमिंटन के बहुत आला खिलाड़ी थे। हमेशा रब्वः में जीता करते थे। यह कहते हैं कि उन्होंने मुझे बताया कि जब वह इंडोनेशिया से रब्वः जामिआ के लिए आने वाले थे तो उन्ही दिनों में उन्हें किसी कंपनी की तरफ़ से बतौर खिलाड़ी एक बहुत बड़ी ऑफ़र मिली थी जिस पर उनके वालिद श्रीमान मौलाना अब्दुल वाहिद साहिब को बड़ी फ़िक्र लाहक़ हुई कि कहीं अब्दुल बासित इस बड़ी ऑफ़र की लालच में जामिआ जाने का इरादा तबदील न कर ले। मौसूफ़ ने बताया कि जब उन्होंने अपने वालिद की यह परेशानी देखी तो पिता को यक़ीन दिलाया और यह अह्द किया कि मैं कभी दुनयवी फ़ायदे के लिए दीन को नहीं छोड़ूँगा और इस तरह बहुत बड़े माली फ़ायदे की ऑफ़र को क़बूल करने से इंकार कर दिया। पूरी ज़िंदगी मौसूफ़ की शाहिद है कि आपने दीन को हमेशा दुनिया पर मुक़द्दम रखा और इस अह्द को निभाया। ख़िलाफ़त से बहुत प्यार करने वाले थे। फ़िदाई और जांनिसार वजूद थे। तालिब-ए-इलमी के दौर से ही हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रहमहुल्ला तआला के बहुत क़रीब थे। कहते हैं हम उनको छेड़ा करते थे कि आप हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रहमहुल्ला तआला के बहुत चहेते हैं। इसी तरह हर ख़िलाफ़त के दौर में उन्होंने बहुत इख़लास-ओ-वफ़ा का नमूना दिखाया। अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए। उनके दर्जात बुलंद फ़रमाए और उन जैसे मुबल्लग़ीन और कारकुनान अल्लाह तआला जमाअत को अता फ़रमाता रहे।

मैंने भी हमेशा उनको जैसा कि मैंने कहा कामिल इताअत करने वाला और बड़ा बेनफ़्स इन्सान देखा है।

अल्लाह तआला जाने वालों की कमियां भी पूरी फ़रमाता रहे। इंडोनेशिया के मुरब्बियान और मुबल्लग़ीन को उनके नमूने खासतौर पर सामने रखने चाहिऐं और बाक़ी दुनिया के मुबल्लग़ीन को भी। यह पुरानी बातें नहीं हैं। आजकल के ज़माने में ये लोग थे जिन्हों ने दीन को दुनिया पर मुक़द्दम किया और वक़्फ़ का हक़ अदा किया।

अगला वर्णन है ज़ैनब रमज़ान साहिबा का। यूसुफ़ उसमान कांबालिया साहिब मुरब्बी सिलसिला तनज़ानिया की पत्नी थीं। यह सत्तर साल की उम्र में गुज़शता दिनों वफ़ात पा गईं। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। उनके मियां यूसुफ़ उसमान कांबालिया साहिब वर्णन करते हैं कि ख़ाकसार की पत्नी बहुत नेक, मुख़लिस और जमाअत के हर काम में शरीक होती थीं। हमसाइयों से बहुत अच्छे ताल्लुक़ात रखती थीं। ग़रीबों और यतीमों की देख-भाल करती थीं। मुरब्बियान की बहुत ख़िदमत और इज़्ज़त करती थीं। चंदों में हमेशा आगे होती थीं। जहां भी हम रहे जमाअती काम के लिए हमेशा पेश पेश रहती थीं। तमाम अहमदियों से बहुत इख़लास के साथ पेश आती थीं। दो अढ़ाई साल से कैंसर की मरीज़ा थीं। ईलाज भी बड़ा कराया। बेहतरीन डाक्टरों से भी ईलाज भी करवाया लेकिन अल्लाह तआला की तक़दीर ग़ालिब आई और गुज़शता दिनों उनकी वफ़ात हो गई। लिखते हैं कि जनाज़े में शमूलियत के लिए टबूरा और मुख़्तलिफ़ इलाक़ों से एक हज़ार के क़रीब अफ़राद मौजूद थे जिनमें ग़ैर अज़ जमाअत रिश्तेदारों ने भी शिरकत की। तीन बेटियां और तीन बेटे हैं जो अब शादीशुदा हैं। अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए।

अगला वर्णन हलीमा बेगम साहिबा पत्नी शेख़ अब्दुल क़दीर साहिब दरवेश क़ादियान का है। गुज़शता माह उनका देहांत हुआ। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। मरहूमा नमाज़ रोज़े की पाबंद, सबर शुकर करने वाली, सादा स्वभाव की और अच्छे आचरण की महिला थीं। बच्चों को भी नमाज़ और तिलावत क़ुरआन-ए-करीम का पाबंद बनाने के लिए मेहनत करती थीं। जब तक सेहत ने इजाज़त दी क़ादियान के बच्चों को क़ुरआन-ए-करीम पढ़ाती रहीं। ख़िलाफ़त के साथ बहुत मुहब्बत और ख़लीफ़-ए-वक़्त की तरफ़ से की गई हर तहरीक पर लब्बैक कहती थीं। दरवेशी के दौर को बड़े सब्र और शुक्र से उन्होंने गुज़ारा और ग़ुर्बत के होने के बावजूद कभी किसी सवाली को ख़ाली हाथ न जाने देतीं। मरहूमा का घर दारुल मसीह के क़रीब होने की वजह से जलसा सालाना के दिनों में मेहमानों से भरा रहता। मेहमानों का निहायत ख़ुश-अख़लाक़ी से स्वागत करके उनकी भरपूर रंग में मेहमान-नवाज़ी करती थीं। मरहूमा मूसिया थीं। उनके बेटे शेख़ नासिर वहीद साहिब बतौर क़ायमक़ाम ऐडमिनिस्ट्रेटर नूर हस्पताल क़ादियान में ख़िदमत की तौफ़ीक़ पा रहे हैं। उनकी तीन बेटियां हैं जो विदेश में हैं। अल्लाह तआला मरहूमा से रहम और मग़फ़िरत का सुलूक फ़रमाए।

अगला वर्णन श्रीमती मैले अनीसा एपिसाई साहिबा (केरीबास) का है। उनकी ज़िंदगी के हालात भी अजीब हैं और क़बूल-ए-अहमदियत का वाक़िया भी अजीब है। बड़ी मुख़लिस वफ़ा-शिआर महिला थीं। उनका गुज़शता दिनों देहांत हुआ। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। तेहत्तर साल उनकी उम्र थी। ख़्वाजा फ़हद साहिब

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 07 Thursday 24-01 December 2022 Issue No. 47-48

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com

मुरब्बी केरीबास कहते हैं कि मेलेनीसा एपिसाई साहिबा केरीबास जमाअत की पहली मुस्लमान और पहली अहमदी थीं। किसी तरह क़ुरआन-ए-मजीद की एक कापी दुनिया के इस कोने में मिल गई। एक ऐसी जगह जहां दूसरी चीज़ों के साथ साथ किताबें भी मुश्किल से नज़र आती थीं। जब आपको क़ुरआन-ए-मजीद का यह नुस्ख़ा मिला तो ख़ुद पढ़ना शुरू कर दिया। अनुवाद साथ होगा। इस को पढ़ने के बाद श्रीमती मैलेनीसा एपिसाई साहिबा पर क़ुरआन-ए-मजीद का इतना असर हुआ कि ख़ुद ही दिल में ईमान ले आईं और उसी वक़्त से पर्दा शुरू कर दिया। जब जमात अहमदिया के पहले मुबल्लिग़ सिलसिला हाफ़िज़ जिबरईल सईद साहिब मरहूम केरीबास तशरीफ़ लाए तो उन्होंने लोगों से पूछा कि यहां इस मुल्क में कोई मुस्लमान है तो सबने श्रीमती मैलेनीसा एपिसाई साहिबा की तरफ़ इशारा किया कि इस पूरे मुल्क में सिर्फ एक ही है जो मुस्लमान है। ख़ुदा का कैसा फ़ज़ल है कि श्रीमती मैलेनीसा एपिसाई साहिबा ने जब दिल में इस्लाम क़बूल किया तो साल के अंदर अंदर ही हज़रत ख़लीफ़तुल

मसीह राबे रहमहुल्ला तआला की हिदायत पर मुबल्लिग़ सिलसिला वहां पहुंच गए। इस बहादुर नौजवान औरत ने मुबल्लिग़ के पहुंचने से पहले ही उस वक़्त अपने ख़ानदान और दोस्तों में इस्लाम की तब्लीग़ भी शुरू कर दी थी और इस वजह से इस छोटे से मुल्क में जिसमें एक लाख की आबादी थी मशहूर हो गया कि एक औरत मुस्लमान हो गई है। इसलिए जब मुबल्लिग़ सिलसिला हाफ़िज़ जिबरईल सईद मरहूम केरीबास के मुल्क में पहुंचे तो अल्लाह तआला ने पहले ही उन्हें एक सुलतान नसीर अता फ़र्मा दिया था जो जमाअत के लिए तैयार हुआ-हुआ था।

एक वाहिद मुस्लमान होने, पर्दा करने और लोगों को तब्लीग़ करने की वजह से मशहूर थीं। जब पहले मुबल्लिग़ सिलसिला जिबरईल साहिब केरीबास आए तो श्रीमती मैलेनीसा ने बैअत कर ली और जमाअत अहमदिया में शामिल हो गईं। आपने मुबल्लिग़ सिलसिला के रहने का इंतेज़ाम किया, सहूलयात का इंतेज़ाम किया, फिर तब्लीग़ में लग गईं। कई लोग आपकी तब्लीग़ के बायस जमाअत में दाख़िल हुए। आपको जमाअत से बहुत मुहब्बत थी। मुरब्बियान-ए-किराम की बहुत इज़्ज़त करती थीं। लोगों की सख़्त मुख़ालिफ़त के बावजूद आपका ईमान कभी कमज़ोर नहीं हुआ। जहां भी जातीं पर्दा कर के जातीं और उनका मुस्लमान लिबास भी तब्लीग़ का ज़रीया बन गया। बावजूद इसके कि लोग आपका मज़ाक़ उड़ाते, बाअज़ दफ़ा गालियां भी देते थे, बेहस भी करते, तंग भी करते। आपने कभी भी अपने ईमान और पर्दे को गिरने नहीं दिया और एक उम्दा मिसाल छोड़ दी कि पर्दा ख़ुदा के लिए है तो फिर लोगों की मैं क्यों फ़िक्र करूँ कि वे क्या कहते हैं। शुरू-शुरू में जब आपने अपने दिल में इस्लाम को क़बूल किया तो नमाज़ पढ़ना नहीं जानती थीं तो सज्दे के बग़ैर अपने तौर पर इबादत शुरू कर दी। जब उनके पिता ने उन्हें नए तरीक़े से इबादत करते देखा तो शदीद ग़ुस्सा का इज़हार किया और क़ुरआन-ए-मजीद को फाड़ने की धमकी दी। उन्होंने जवाब में अपने बाप को कहा कि फिर बाइबल के भी वह सफ़हात फाड़ देने चाहिऐं जिसमें हज़रत-ए-ईसा के ख़ुदा के आगे सजदे का वर्णन है। वह अपने अक़ीदे पर बहुत बहादुरी से क़ायम रहीं। फिर अल्लाह तआला के फ़ज़ल से मुबल्लिग़ सिलसिला के आने की वजह से आपने ख़ुद भी नमाज़ सीखी और फिर लोगों को सिखाई। दुनिया के इस कोने में जब सारे के सारे लोग इस्लाम को बुरी नज़र से देखते थे उस वक़्त यह मुजाहिदा खड़ी हो कर सब का मुक़ाबला करती और इस्लाम की तालीमात बग़ैर किसी डर के पेश करती थीं। सिवाए अल्लाह तआला के आप किसी से नहीं डरती थीं। इस ख़ूबी की वजह से काफ़ी लोग और काफ़ी सियासतदानों पर भी आपका बहुत रोब था और अल्लाह तआला का ऐसा फ़ज़ल हुआ कि आपके इस रोब और ईमान पर मज़बूती की वजह से सियासतदानों पर एक दबाओ ऐसा पड़ा और उन पर ऐसा असर हुआ कि जमाअत की रजिस्ट्रेशन में भी उन्होंने तआवुन किया जो इस से पहले मुख़ालेफ़त की वजह से मंज़ूर नहीं हो रही थी। बहुत सारे लोग ऐसे भी थे जो उनको जानते थे और उनका रोब भी ऐसा था कि वह उनकी मौजूदगी में इस्लाम के ख़िलाफ़ कोई मनफ़ी बात नहीं कर सकते थे।

आप अपना घर हमेशा खुला रखतीं कि लोग आएं और जो भी सवाल करना चाहें वे करें। अपने घर में सबको नमाज़ की बाक़ायदगी की तलक़ीन करती थीं। बहुत अरसा के लिए अपना घर नमाज़ सैंटर भी बनाया हुआ था। उनका बेटा अहमद एपिसाई जब जवानी की उम्र को पहुंचा तो आपने उसको जमाअत के लिए वक़्फ़ कर के जामिआ अहमदिया घाना भिजवा दिया। लोगों ने आपको बहुत रोकना चाहा कि क्यों तू अपने बेटे को उधर भेज रही है। वह तेरे बेटे को उधर मार देंगे लेकिन आपने फ़ख़र से अपने बेटे को भेजा लेकिन अल्लाह तआला की तक़दीर थी कि अफ़्रीक़ा जा के अहमद अपीसाई मलेरीया की वजह से बीमार हुआ और वहां वफ़ात पा गया। उस वक़्त यही लोग आए और कहा देखो! इस्लाम झूठा है इसलिए तेरा बेटा फ़ौत हो गया है लेकिन मेलेनीसा एपिसाई साहिबा ने इस की कोई पर्वा नहीं की, कोई तवज्जा नहीं दी और इस्लाम पर मज़बूती से क़ायम रहें और इस्लाम की ख़ातिर पहले से भी बढ़के ज़ोरो शोर से काम करने लगीं। न उनके ईमान पर कोई फ़र्क़ आया और न ही उनके पर्दे पर। आपके दूसरे बच्चे भी इस्लाम पर साबित-क़दम रहे। तब्लीग़ भी जारी रही।

आपने अपने पीछे तीन बेटियां और एक बेटा छोड़े हैं। अल्लाह तआला उनको सब्र अता फ़रमाए और अपनी माँ की तरह इस्लाम और अहमदियत की ख़िदमत करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

अल्लाह तआला उनके वहां लगाए हुए बीज में बरकत डाले और उनकी ख़ाहिश के मुताबिक़ यह छोटा सा द्वीप अहमदियत की आग़ोश में आ जाए। अल्लाह तआला ऐसी निडर और अपना नमूना क़ायम करने वाली और तब्लीग़ का जोश रखने वाली और अपने ईमान पर क़ायम रहने वाली ख़वातीन और भी जमाअत को अता फ़रमाता रहे, ऐसी माएं और भी अता फ़रमाता रहे जिन्हों ने मुबल्लग़ीन से बढ़कर तब्लीग़ का हक़ अदा किया है।

अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए, दर्जात बुलंद फ़रमाए।

★ ★ ★

पृष्ठ01 का शेष

और देर तक अहल-ए-किताब के ज़ुलम सहे और आख़िर मजबूरन उनके मुक़ाबला पर निकले।

क़ुरआन-ए-करीम की यह कितनी बड़ी अख़लाक़ी ख़ूबी है कि जिहाद का हुक्म देने से पहले उसने उसकी हदूद-ओ-क़ुयूद को बयान करना शुरू कर दिया है ता ज़्यादती करने का एहतेमाल ही बाक़ी न रहे।

उक़ाब के शब्द में यह इशारा किया है कि नाजायज़ हमले का उत्तर ही जिहाद कहलाता है, जारिहाना हमला जिहाद नहीं कहला सकता क्योंकि उक़ाब का शब्द उस फ़ेअल के मुताल्लिक़ बोला जाता है जो दूसरे के फ़ेअल के फ़ेअल के जवाब में किया जाए। अतः इस शब्द से इस तरफ़ इशारा किया है कि जब सज़ा दो, जुर्म के बाद दो।

بِمِثْلِ مَا عُوْقِبْتُمْ शब्दों से यह हिदायत की है कि सज़ा देनी ही पड़े तो भी यह ख़्याल रहे कि जितनी तुमको तकलीफ़ पहुंचाई गई है इस से ज़्यादा न हो।

لَئِنْ صَبَرْ तुम में सब्र की तरग़ीब दी है और बताया है कि सब्र अपने नतीजा के लिहाज़ से निहायत ही आला होता है।

जंग-ए-अहद में हज़रत हमज़ा (आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के चचा) और अहद के अलैहि के साथ कुफ़्फ़ार ने यह सुलूक किया कि उनके नाक और कान भी काट दीए (अर्थात मुसला किया) किन्तु आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सब्र किया और मौक़ा पाने पर भी इस बुरी और नंग-ए-इन्सानियत रस्म की इजाज़त नहीं दी।

कभी कबार कुफ़्फ़ार वादे तोड़ते थे। परन्तु आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम सबर ही फ़रमाते थे। सब्र का नतीजा बेहतर होता है। बदला लेने से सिर्फ इन्सान का ग़ुस्सा दूर हो जाता है। मगर सब्र करने की सूरत में इस की रूहानियत तरक़्क़ी कर जाती है।

(तफ़सीर-ए-कबीर, भाग 4 पृष्ठ 274 मुद्रित क़ादियान 2010 ई.)

★ ★ ★

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad